श्री साधुबेला तीर्थ के गद्दीश्वर
श्री १०८ स्वामी हरिनामदास जी उदासीन

जन्म वि० सं० १९३७ पौष कृष्ण १०

ब्रह्मलीन वि० सं० २००६ पौष कृष्ण ८

अनुक्रमणिका

चित्र परिचय

जपो जल्पः शिल्पं सकल मपि मुद्रा विरचना,
गति प्रादक्षिण्य क्रमण मदनान्याहुति विधिः ।
प्रणामः संवेशः सकल मिद मात्मार्वण विधौ,
सपर्य्या पर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥ जवद्गुरु भट्ट ॥

भाविक प्रकृति के उत्थान पतनात्मक चक्र-परिवर्तन से मानव जीवन को बहुत कुछ शिक्षण मिलता है। संसार को सुख-शान्तिमय सुधा पिलानेवाले भारत के प्राण महर्षिगण कन्दुक की तरह विश्व को नचानेवाले वीर पुङ्गव सप्तद्वीपा वसुमती के एकमात्र शासक आज ढूँढ़े नहीं मिलते। अनन्त सागर में मानव की सत्ता बुदबुदामय है। प्रकृति के सहज स्पन्दन में ही जिसका अस्तित्व व विनास स्थिर है, क्या यही मानव स्वरूप है कि कुछ दिन अपनी छटा दिखाकर अतीत के अन्तःस्थल में लुप्त हो जावे ? क्या-ज्ञान, विज्ञान, कला-कौशल, योग्यता सिर्फ क्षणिक सुखोपार्जन के लिये ही है ? मानव जीवन का अस्तित्व क्या इतना सङ्कीर्ण एवं निराशामय है, यह एक विचित्र मीमांसा है साधारणता अनबूझ पहेली है।

मांसक व्यक्ति के समक्ष जब यह प्रश्न उपस्थित होता है, तो एक बार तो वह सहसा किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो जाता है। मानव जीवन को रहस्यमय अद्भुतमय देखते हुए चित्रलिखित-सा हो गीता के शब्दों में "आश्चर्यवद् पश्यति कश्चिदेन माश्चर्यवद् वदति तथैव चान्यः। आश्चर्य वच्चै न मन्यःशृणोति श्रुत्वाऽप्येनं वेद न चैव कश्चित्॥" अपने आश्चर्य की पुनरावृत्ति करता है इस संशय के सागर में गोते खाते हुए कोई सहारा न पाकर विश्व के निर्माता की प्रार्थना जब करता है। "तस्मात्त्वमद्द शरण मम दीनबन्धो" की आर्त्त पुकार सुनकर प्रभु किसी न किसी रूप में आकर उसके इस संशय को दूर करते हैं।

दुनिया को चकाचौंध करनेवाली विद्या पढ़ करके जिस व्यक्ति ने आत्म-निरीक्षण की विद्या नहीं पढ़ी, जिस एक के पढ़ने से प्राणिमात्र का साहित्य पढ़ा जाता है "एकस्मिन् विज्ञाते सर्व मिदं विज्ञातंभवति" उस परम तत्त्व विद्या की प्राप्ति यदि न हुई तो मानव जीवन व्यर्थ है। संसार में दुर्लभ मानव देह प्राप्त कर आत्म-स्वरूप एवं आत्म कर्त्तव्य को समझ लेना ही परम निश्रेयश की प्राप्ति का प्रथम सोपान है।

र एक धर्म में तथा सम्प्रदाय में महापुरुषों ने अपनी अपनी योग्यतानुसार इस तत्त्व को जानने की तथा संसार के प्राणिमात्र को समझाने की प्रबल चेष्टा की है, संसार के अस्तित्व को सुखमय शान्तिमय बनाने में सन्त महापुरुषों का

प्रबल हाथ है। महापुरुषों के रूप में महाप्रभु स्वयं पधार करके किंकर्त्तव्य प्राणी को सन्मार्ग बताते हुए आदेश करता है "तेन यायाति सतां मार्गं तेन गच्छन् न शिष्यते" वशिष्ठ, व्यास, सनकादिक उदासीन, याज्ञवल्क्य प्रभृति ब्रह्मर्षि, जनक, अश्वपति जैसे राजर्षि, गौतम बुद्ध भगवान्, स्वामी शङ्कराचार्य, स्वामी श्रीचन्द्राचार्य, श्रीगुरु नानकदेव, महापुरुष शिरोमणि कबीर व समर्थ रामदास जैसे तत्त्ववेत्ताओं ने जीवन की इस पहेली को सुलझाने में बहुत परिश्रम उठाया है। आज उनकी रचनायें पथभ्रष्ट प्राणी के लिये प्रकाश-स्तम्भ का काम कर रही हैं। सन्तों के अनुभवी उपदेश बार-बार स्मरण दिलाते हैं।

अरे भज हरेर्नाम क्षेमधाम क्षणे क्षणे।
बहिश्चरति निश्वासे विश्वासः कः प्रवर्त्तते॥

कबीर साहेब अपने अनुभव की बात कहते हैं कि—

मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार।
पक्का फल तो गिर पड़ा, लगे न दूजी बार॥

माया तो ठगनी बनी, ठगत फिरै सब देश।
जा ठगने ठगनी ठगी, ता ठग को आदेश॥

ज्यों नैनन में पूतली, त्यों मालिक घट माहिं।
मूरख लोग न जानते, बाहिर ढूँढ़न जाहिं॥

रिपुदमन नाम रखवा करके गीदड़ों से डरना यह कायरता (भीरुता) है। दुनिया के शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेना बड़ी शूरवीरता नहीं। किन्तु भीतर के शत्रु, जो तुम्हें एक क्षण में साक्षर से राक्षस बना देते हैं, तुम्हारे भीतर

के तन्त्रों को बिगाड़ देते हैं, उन पर विजय प्राप्त करो तभी तुम्हारा नाम रिपुदमन हो सकता है। भगवान् शङ्कराचार्यजी ने श्लोक के एक चरण में यह स्थिर सिद्धान्त निर्णय किया है "जितं जगत् केन मनो हि येन" संसार में रहकर भी यह पुरुष पलास की तरह निर्लेप है। जिसने अपने मन को ज्ञानाङ्कुश द्वारा काबू किया हो, कलियुग में ऐसे प्रातःस्मरणीय महापुरुषों की नामावली में श्री साधुबेलातीर्थ पीठाधीश्वर तपोमूर्ति उदासीन वर्य्य समाजसेवी हिन्दू-धर्म-रक्षक महासमर्थ श्री १०८ स्वामी हरिनामदास जी महाराज का पवित्र नाम विख्यात है।
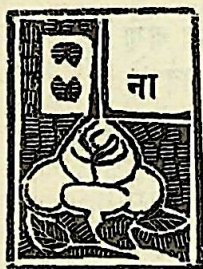
मकरण के अनुरूप ही इस महापुरुष में गुण विद्यमान थे। उच्च वंश में उत्पन्न होकर प्रारम्भ से ही निवृत्ति-परायण सत्शास्त्र के अध्ययन की लगन, सन्त-सेवा-वृत्ति, मृदु-भाषिता यह शुभ गुण सूचित करते थे कियह व्यक्ति संसार में अपना नाम आलोकित करेगा। सिन्ध, पञ्जाब, काश्मीर, यू०पी०,सी० पी०, बिहार, मुम्बई, जावा, सुमात्रा, हाङ्ग-काङ्ग, चीन, लङ्का, अमरीका, लन्दन सभी जगह इस व्यक्ति का शुभ नाम पहुंच चुका था। जिस सिंहासन पर यह महापुरुष विराजमान थे उस प्रातःस्मरणीय योगिराज सिद्धेश्वर स्वामी बनखण्डी जी महाराज के श्री साधुबेला तीर्थ के हजारों शिष्य सेवक देश-देशान्तर में स्वामी जी की कीर्तिसौरभ को भ्रमर की तरह ले जाकर सुशोभित कर रहे थे और आज भी कर रहे हैं। इस पुस्तक के चरित्र नायक में क्या खूबियाँ थीं, अपने जीवन के लम्बे अरसे में अपना आदर्श जनता के समक्ष रखा। जनता को मन्त्रमुग्ध

करने की इनमें अपूर्व विशेषता क्या थी, इन सब बातों को हमारे परमप्रिय सफल लेखक पं० श्री स्वामी सुतीक्ष्ण मुनि जी महाराज हिन्दू सनातन धर्मोपदेशक बहुग्रन्थ निर्माता ने इस ग्रन्थ में बहुत प्रकाश डाला है। ग्रन्थ-लेखक जी का पूज्य स्वामी जी महाराज के साथ ३३ वर्ष के लगभग सम्पर्क रहा तथा पूज्य स्वामी जी के जीवन का ध्येय, जितना गूढ़ ज्ञान सुतीक्ष्ण मुनि जी को हो सकता है उतना मुझको नहीं।

पूज्य स्वामी जी महाराज अपने जीवन में क्या प्रकाश ले करके आये थे, सिन्ध के हिन्दुओं में उन्होंने क्या नवचेतना फूँकी थी, यह आपको पुस्तक पढ़ने से मालूम हो जायगा।

द मात्सर्य, मोह, मदिरा मदोन्मत्त जगत् को समय-समय पर प्रबोधन दिया था तो इन्हीं महापुरुषों ने, आपस की फूट, मिथ्याभिमान, पारस्परिक द्वेषानल में दग्ध जगत् को देखते हुए सान्द्रनील पयोधर के रूप भगवान् गौतम बुद्ध ने घन गर्जना द्वारा नव जीवनता दी थी।

"बुद्धं शरणं गच्छसि धर्मं शरणं गच्छसि सघं शरणं गच्छसि" जातियों का अस्तित्व व जीवन सङ्गठन में ही निहित है न कि विघटन में। सब जातियाँ हिल-मिलकर एक माला के पवित्र अनेक विधि प्रसून की शोभा धारण करते हुए उस नटनागर के गले का हार बनने में ही हमारी पूर्ण योग्यता व परम शोभा है।

विभिन्न शक्तियों का विभिन्न नदियों की तरह एक लक्ष सामरोन्मुख प्रवाह ही उनकी सफलता है, स्वामी जी अपने मधुर भाषण में प्रायः इन्हीं बातों पर विशेष जोर दिया करते थे।

सता का युग भारत पर जब अभिशाप के रू में लगा हुआ था, उस समय सक्खर, कोयटा शिकारपुर, हैदराबाद सिन्ध, कराची, हरिद्वार काशी, प्रयागराज आदिक स्थलों में पूज्य श्री स्वामी जी स्वयं भ्रमण करते हुए तथा पूज्य श्री स्वामी जी द्वारा स्थापित जगद्गुरु श्रीचन्द्रोदासीनोपदेशक सभ जो आज भी अपना कार्य कुम्भ पर्वों पर यथावत् कर रही है सफल वक्ताओं द्वारा मातृभूमि की महत्वता, मातृभूमि के लि हमारा कर्त्तव्य, साधु, ब्राह्मणों का उत्तरदायित्व, ऐसे-ऐसे आवश्य विषयों पर सफल व्याख्यान होते थे, जिससे भारत के कोने-को में स्वातन्त्र्य एवं स्वदेश के लिये सद्भावना पैदा होती थी। यह पूज्य स्वामी जी का पवित्र आदर्श रहा है। वृद्धावस्था में श्र साधुबेला परित्याग कर काशीवास करते हुए भी महाराज हृदय में उत्थान व देश के उत्कर्ष के लिये जो सद्भावना थी, व जो उनके सम्पर्क में आये हुए हैं उनसे छिपी नहीं है।

ज्जनों ! प्रातःस्मरणीय योगिराज सद्गुरु ब खण्डी सिंहासनासीन परमहंस, परिव्राज चार्य वीतराग, तपोमूर्ति, समर्थ श्री १०८ स्वाम हरिनामदास जी महाराज के जीवन-चरित्र लिख करके पं० सुतीक्ष्ण मुनि जी ने श्री साधुबे तीर्थ सम्बन्धित सज्जनों पर ही उपकार नहीं किया, किन्तु सम जनताको एक प्रकाश-स्तम्भ दिया है कि स्वामी जी जनता के सम

किस रूप में आये और उन्होंने अपने जीवन से सेवाभाव को अपनाते हुए मानव मात्र के हृदय में कितना प्रबल अधिकार प्राप्त किया है। इसके बदले में हम पं० सुतीक्ष्ण मुनि जी के हृदय से आभारी हैं। दुर्दैववश सिन्ध पाकिस्तान में आनेसे वह श्री साधु-बेला पवित्र पीठ हमारे पास नहीं है फिर भी योगिराज सद्गुरु बनखण्डी जी की वह दुर्दम ज्योति स्वामी जी महाराज के उत्तराधिकारियों में है। हमें पूर्ण आशा है कि पूज्य स्वामी जी के अनुयायी एवं उत्तराधिकारी श्रीमान् महन्त स्वामी गणेशदास जी महाराज तथा कोठारी महाराज बाबा गुरुचरणदास जी श्री स्वामी जी महाराज के चरण-चिह्नों पर चलते हुए देश और भेष के कल्याण में पूर्ण हाथ बटायेंगे।

वन का प्रभात है तो सन्ध्या भी निश्चित है, उत्थान और पतन तो युगधर्म है ही, परन्तु जिस महापुरुष की धवल कीर्ति संसार गाता हो वह महान् व्यक्ति सदा जीवित है। अपने कीर्ति शरीर से वह मृत्यु का भी मृत्युञ्जय है। महापुरुषों का शारीरिक प्रेम या तद्विषयक आस्था कभी नहीं होती, "एकान्त विध्वंसिषुमदविधानां पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु" कवि कालिदास के शब्द उन पवित्र महात्माओं के जीवन का स्वरूप—स्मरण दिलाते रहते हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि पूज्य स्वामी जी महाराज का आदर्श साधुसमाज में शतिधा विकसित हो। आज देश को सचमुच सच्चे सन्त-महात्माओं की

आवश्यकता है। ऐसे महापुरुष ही समाज के युगप्रवर्तक ब
करके आते हैं और भय वित्यक्त प्राणिमात्र को सन्मार्ग का उप
देश करते हैं।

"नान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय"

प्रार्थी—म० रामस्वरूप शास्त्री उदासीन
वेदान्ताचार्य
गुरुमण्डलाश्रम, हरिद्वार

समर्पण

आये थे हम जगत में, जग हँसे हम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसें जग रोय॥

प्रिय पाठकवृन्द ! पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय परमहंस परिव्राजकाचार्य उदासीन कुल-कमल-दिवाकर श्री साधु-बेला पीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी हरिनामदास जी महाराज की सेवा में वि० सं० १९७८ से मेरा निवास रहा। आपका देश तथा भेष-प्रेम, सरल स्वभाव, सादा रहन-सहन देख करके मेरी अटल श्रद्धा आपके चरणों में हुई जो अन्त तक एक रस निभ गई। आपका भी आत्मीय जैसा पूर्ण प्रेम तथा विश्वास मेरे पर था। मेरा निष्कपट व्यवहार देख करके आपने कभी भी मेरे से किसी बात का भेदभाव नहीं रखा था।

पूज्य स्वामी जी के वृत्त उपकारों का स्मरण करते हुए गद्-गद् हृदय से उनका पवित्र जीवन-चरित्र लिखकर स्वान्तः सुख का लाभ ही उद्देश्य रख करके यह पुस्तक श्री साधुबेला के वर्तमान पीठाधीश्वर (महन्त) श्री स्वामी गणेशदास जी एवं

श्रीमान् कोठारी महाराज गुरुचरणदास जी के पवित्र करकमलों में सप्रेम समर्पण करते हुए परिपूर्ण परमात्मा एवं महासमर्थ ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी जी से इनकी सर्वथा, सर्वतः मङ्गल कामना करता हूँ कि आप दोनों महानुभावों की विमल कीर्ति कौमुदी संसार में सदैव प्रखरित (जगमगाती) रहे।

आप दोनों का शुभेच्छु
सुतीक्ष्ण मुनि उदासीन

मकर संक्रान्ति
वि० सं० २००६
१४-१-५०

श्री साधुबेला तीर्थ, सक्खर सिन्धु
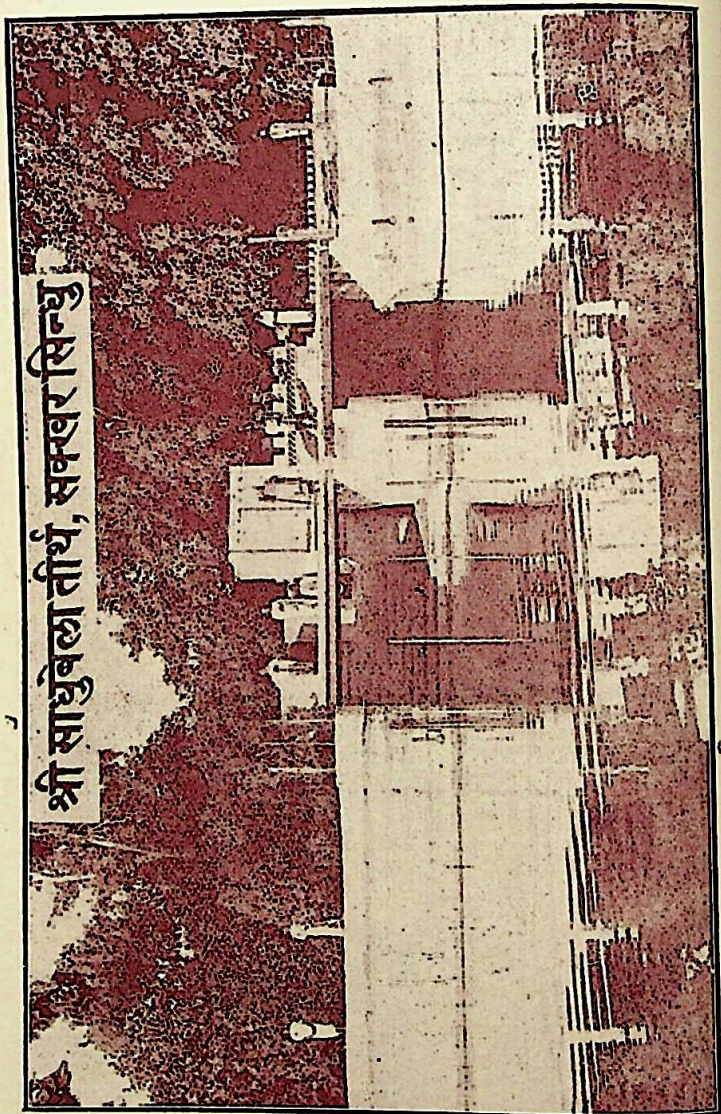
॥ ॐ ॥

श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीचन्द्रोदासीनाचार्य्योविजयतेतराम्

श्री साधुबेलापीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी का संक्षिप्त जीवन-चरित्र

श्री साधुबेलापीठ (तीर्थ) परिचय

वित्र हिन्दू शब्द का तथा उसकी मूल संस्कृति का उद्गम स्थान सिन्धु प्रदेश है। सिन्धु का परिवर्तित रूप ही हिन्दू है। वेदों के प्रकाश की पवित्र किरणें सिन्धु के वक्षस्थल पर ही प्रथम पड़ी थीं। वेदों के व्यास करनेवाले महर्षि वेदव्यास के पवित्र चरणों से यह देश पुनीत रहा है। उसी सिन्ध प्रदेश के प्रसिद्ध नगर सक्खर में श्री सप्तसिन्धु गङ्गा के तरल तरङ्गों के मध्य अगाध जल के बीच परम रमणीय नयनाभिराम लोकप्रिय उदासीन आश्रम है। इसको श्री १००८ योगिराज सिद्धेश्वर सद्गुरु बनखण्डी जी महाराज ने स्थापित किया था तथा नाम श्री साधुबेलापीठ रखा था।

पीठवासी पूर्वजों का परिचय

पीठ-प्रतिष्ठता का परिचय—योगिराज सिद्धेश्वर श्री १००८ सद्गुरु स्वामी बनखण्डी जी महाराज का अवतार नगर कुरुक्षेत्र वि० सं० १८२० चैत्र शुक्ल ७ सोमवार को पण्डित रामचन्द्र जी गौड़ ब्राह्मण के घर माता श्रीमती मनोरमा देवी के गर्भ से हुआ था। आपका जन्म नाम भालचन्द्र था।

वि० सं० १८३० वैशाख शुक्लः ३ को उदासीन सम्प्रदायानुसार श्रौत चतुर्थाश्रमी दीक्षा ले करके श्री सद्गुरु स्वामी मेलाराम जी के शिष्य बने। नाम बनखण्डी जी रखा गया।

पश्चात् आप बहुत काल तक घोर तप करते रहे। नैपाल की तराई में आज भी उनके पवित्र गीत वहाँ के वासी गा रहे हैं। नैपाल राज्य की मोरन झाड़ी में जिस जगह स्वामी जी ने तपस्या की थी, वहाँ पर साल नामक वृक्ष में आम के फल लगते हैं। महाराजश्री तप से पूर्ण प्रज्ञ बनकर भारत-भ्रमणार्थ निकले। ब्रह्मदर्शन में आपको अनुशाङ्गिक अपूर्व सिद्धियों का लाभ हो गया था।

समस्त भारत के कोने-कोने में भ्रमण करते हुए सुन्दर हिन्दू जाति के उत्थानवाले उपदेशों का शास्त्रानुसार प्रचार करते हुए वि० सं० १८७५ में मुम्बई नगर में पधारे।

आपकी अनुपम शोभा, सिद्धि, साधु उचित गुणों को देख करके प्रत्येक जाति के लोगों को स्वामी जी में पूर्ण श्रद्धा हो गई। मुम्बई नगर का प्रसिद्ध पारसी दादी सेठ ने आपके गुणों को देख करके श्रद्धापूर्वक बहुत-सी भूमि, जो कि श्रीमहालक्ष्मी मन्दिर तक फैली हुई है, पूज्य स्वामी बनखण्डी जी महाराज को अर्पण की। पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपने करकमलों द्वारा उस रमणीय स्थान में बट-वृक्ष लगाये तथा धूनी की स्थापना

श्री १००८ पूज्यपाद प्रातःस्मर्णीय
परमहंस परिव्राजकाचार्य निरङ्कारी सद्गुरु बनखण्डीजी उदासीन
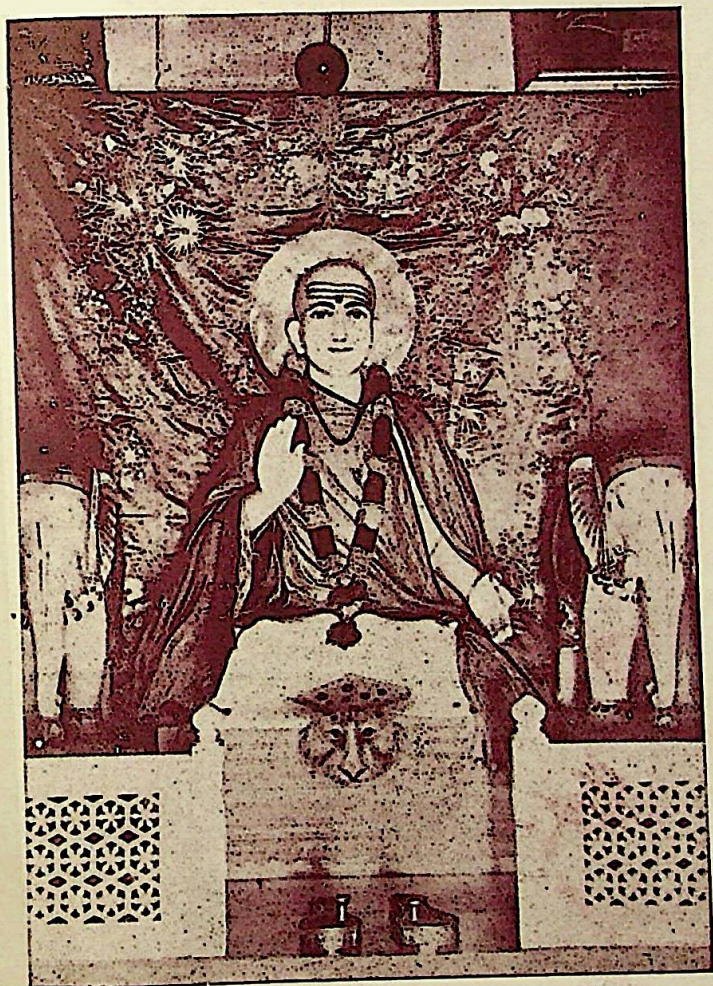
संस्थापक श्री साधुबेला तीर्थ सक्खर सिन्ध

की, जो कि अब तक अखण्ड प्रज्वलित रहती है। पूज्य स्वामी जी के रोपण किये वृक्ष आज तक विद्यमान हैं। उन्हीं वट-वृक्षों के नीचे योगिराज सद्गुरु बनखण्डी जी महाराज की गद्दी (सिंहासन) विराजमान है, जिससे स्थान की अपूर्व शोभा बढ़ रही है। जिस स्थान में योगिराज सद्गुरु बनखण्डी जी महाराज विराजमान हुए थे, वह स्थान श्री साधुबेला उदासीन आश्रम के नाम से प्रसिद्ध है।

सिन्ध देश आगमन—कुछ समय तक आपने मुम्बई में निवास करके अपने ज्ञानोपदेश द्वारा लोगों का कल्याण किया। पश्चात् सिन्ध देश का उद्धार करने का विचार करके अपने छोटे गुरुभाई महाराज स्वामी गुरुमुखदास जी* को अपने आश्रम (श्रीसाधुबेला) में रख के आप अपने साथ तृतीय गुरुभाई महाराज स्वामी सन्तदास जी तथा अभ्यागत साधु गङ्गाराम जी को साथ ले कर मण्डली सहित मुम्बई से प्रस्थान किया। डाकोर जी, गोदरा की झाड़ी, आबू, द्वारका, सुदामापुरी, नारायणसर का भ्रमण करते वि० सं० १८८० वैसाख कृष्ण: २ को सिन्ध देश सक्खर नगर में आये।

सक्खर नगर में पवित्र सिन्धुगङ्गा के मध्य एक खाली टेकड़ी

---

* महाराज स्वामी गुरुमुखदास जी वि० सं० १९१९ आषाढ़ वदी २ को दिन के प्रात: ५ बजे ब्रह्मलीन हुए, जिनका समाधि-स्थान श्रीसाधुबेला मुम्बई में आज तक विद्यमान है। अनेक यात्री सिद्धेश्वर सद्गुरु बनखण्डी जी महाराज की धूनी तथा समाधी का दर्शन करने आते हैं और मनोवाञ्छित फल प्राप्त करते हैं। यह स्थान श्रीसाधुबेला तबसे श्रीसाधुबेलापीठ (तीर्थ) सक्खर सिन्ध के महन्तों, पीठाधीश्वरों के हस्तगत (आधीन) चला आ रहा है।

पहाड़ी देख कर वहीं अपना आसन लगाया और अपने आसन लगाने के स्थान का शुभनाम श्रीसाधुवेलापीठ (तीर्थ) रखा। स्थ न में अपने करकमलों द्वारा वट-वृक्षों की तथा धूनी की स्थापना की। उसी श्रीसाधुवेलापीठ में ४० वर्ष तक निवास करके जनता में धार्मिक जागृति का प्रचार करते हुए वि० सं० १९२० आषाढ़ वदी २ को ऐहिकलीला समाप्त करके ब्रह्मलीन हो गये। आपके पश्चात् श्रीसाधुवेलातीर्थ के सिंहासन पर आपके शिष्य श्री स्वामी हरिप्रसाद जी विराजमान हुए। स्वामी हरि-प्रसाद जी के बाद स्वामी अचलप्रसाद जी सिंहासनासीन हुए। स्वामी अचलप्रसाद जी के पश्चात् चरित्र-नायक के सद्गुरू स्वामी जयरामदास जी श्रीसाधुवेलातीर्थ के सिंहासनासीन हुए। (स्वामी जयराम जी योगिराज सद्गुरु वनखण्डी जी महाराज के ज्येष्ठ शिष्य स्वामी हरिनारायणदास जी के शिष्य थे।)

चरित्र-नायक का बाल्यजीवन तथा श्रीसाधुबेलापीठ से सम्पर्क

मारे चरित्र-नायक का शुभ जन्म सक्खर नगर में धर्म- प्रेमी सेठ आवतमल जी के घर वि० सं० १९३७ पौष कृष्णः १० रविवार घड़ी ५३।८ विशाखा नक्षत्र में माता श्रीमती कृष्णाबई के गर्भ से हुआ था। जन्म-नाम नारायणदास था। जन्म से पूर्व पिता प्रतिदिन श्रीसाधुवेलातीर्थ में दर्शनार्थ जाते थे, सद्गुरु बनखण्डी जी महाराज के चरणों में सन्तानलाभ की प्रार्थना करते थे। उस समय के पीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी जयराम दास जी महाराज ने योगिराज सद्गुरु बनखण्डी जी महाराज

का प्रसाद देते हुए कहा कि सेठ इस प्रसाद को पति-पत्नी भक्षण करो, गुरु-कृपा से अवश्य सन्तानलाभ होगी। पिता सेठ आवतमल जी ने स्वामी जी के वचनों को स्वीकार करके यह मान्यता की कि यदि मुझे कई सन्तानें होंगी तो एक पुत्र श्रीसाधुवेलातीर्थ की सेवा में अर्पण करूँगा।

प्रभु-कृपा से नियत समय पर सेठ आवतमल जी को चार सन्तानें हुईं। आप उनमें से दूसरे नम्बर के पुत्र थे, पाठकों की जानकारी के निमित्त जन्मकुण्डली नीचे देते हैं—

श्री हरिनामदासस्य जन्म लग्नम्
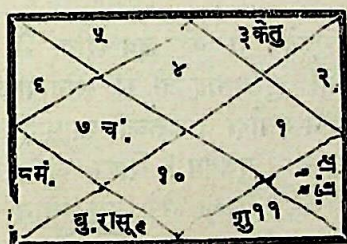
आपके माता-पिता ने इस अलौकिक बालक का जातकर्म संस्कार मुण्डन, यज्ञोपवीत कराय सप्त वर्ष की अवस्था में प्रतिज्ञानुसार प्रिय पुत्र नारायण को (जिनका बाल्यकाल ही में पवित्र सन्तों जैसा जीवन शान्तिमूर्ति प्रतीत होता था) श्रीसाधुवेलापीठाधीश्वर स्वामी जयरामदास जी के पवित्र चरणों में अर्पण किया, स्वामी जयरामदास जी ने नारायणदास की अगाध प्रतिभा देख कर उसे विद्याभ्यास में लगाया। होनहार बालक ने कुछ समय में ही सब आवश्यक अध्ययन कर लिया।

श्री स्वामी जयरामदास जी ने इनका होनहार मस्तक भाग्यशाली, शान्तिमूर्ति देख करके सप्तवर्ष की आयु में वि० सं०

१९४४ आश्विन शुक्लपक्ष १५ को उदासीन सम्प्रदाय मर्य्यादानुसार श्रौत चतुर्थाश्रमी* दीक्षा दे कर शिष्य (चेला) बनाय नाम हरिनामदास जी रखा। तथा विद्याध्ययन में प्रवृत्त कराया।

असारे खलु संसारे त्रयमेतत् सुदुर्लभम्।
मनुष्यत्त्वं, मुमुक्षुत्त्वं, महापुरुष संश्रयः॥
"विद्याददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाधन माप्नोति, धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥

पीठारोहण तथा संस्कृति रक्षा का महाव्रत

पूज्य गुरुदेव जी की छत्र छाया में विद्यागुरु श्री स्वामी गुरुप्रसाद जी से सांगोपाङ्ग विद्या ध्ययन प्राचीन मर्यादा व कर्त्तव्यों का पूर्ण परिशीलन कर लिया था। गुरुदेव! शिष्य की इस सफलता को देख कर प्रसन्न हो कहते थे कि मेरे इस स्थान पर मेरे योग्य शिष्य हरिनामदास को नियुक्त करना जिससे संस्था एवं समाज की सेवा सुचारु रूप से होती रहे।

वि० सं० १९५० प्रथम आषाढ़ वदी ८ बुधवार को सद्गुरु-देव स्वामी जयरामदास जी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् पूज्य श्री स्वामी हरिनामदास जी महाराज सिंहासन पर विराजमान हुये। आपने कार्यभार हाथ में ले करके परिस्थिति का अध्ययन

---

* श्रौत चतुर्थाश्रमी उदासीन सम्प्रदाय सृष्टि प्रारम्भकाल से ही अविच्छिन्न चली आती है इसकी साक्षी वेद, पुराण, इतिहास दे रहे हैं। इसके प्रमाण के लिये देखो "श्रौतमुनि चरितामृतम्" "हिन्दूधर्म व्यवस्था"। "जगद्गुरु श्री चन्द्रोदयम् महाकाव्यम् मुनिमानस" ग्रन्थ।

श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी महाराज उदासीन
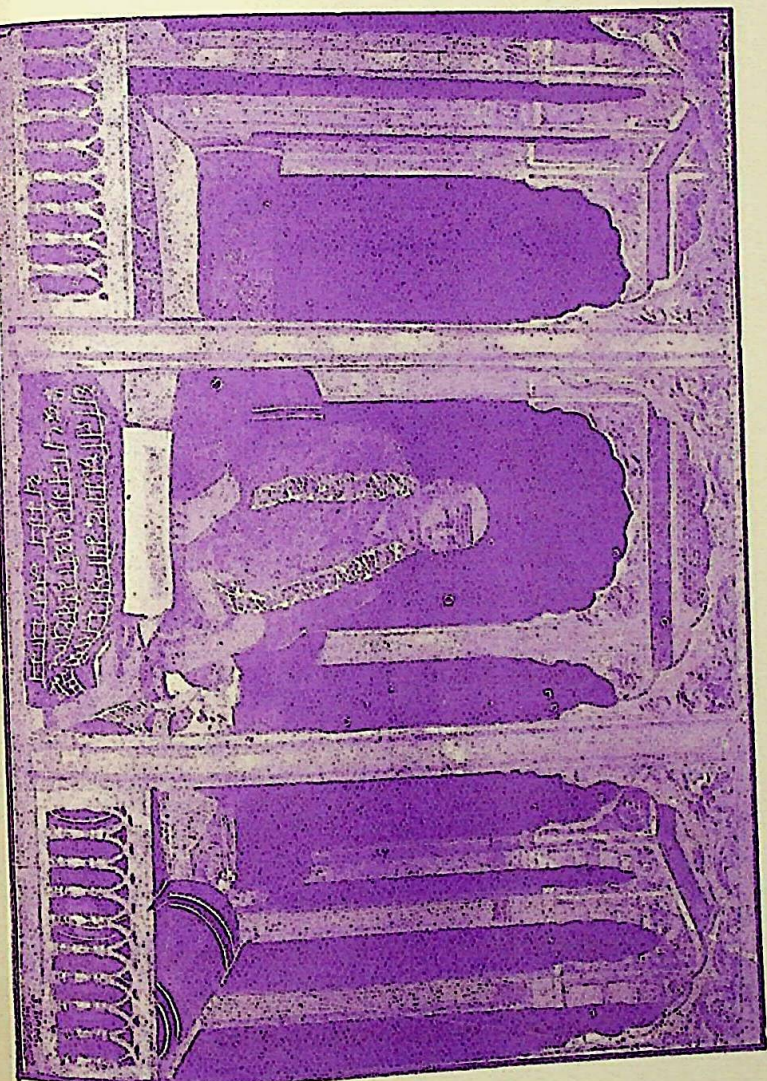
क्रिया, तथा स्थान की मर्यादा एवं धर्मरक्षा एवं समाजिक त्रुटियों के सुधार का महाव्रत लिया। पूज्यस्वामी जी का स्वदेश प्रेम तथा संस्कृति के प्रेम का परिचय श्रीस्वामी जी के रचित निम्न-लिखित ग्रन्थों से होता है।

(१) श्री सिन्धु सप्तनद गंगा महात्म्य संस्कृत मूल पर हिन्दी, गुरुमुखी तथा सिन्धी अनुवाद।

(२) विचारमाला तथा जीवन चरित्र स्वामी हरिप्रसाद जी भाषाटीका सम्पादन।

(३) प्राचीन मुनियों का पुरुषार्थ।

(४) गुरुसाखी सूर्योदय चरितामृतम् (हिन्दी-सिन्धी-अँग्रेजी)।

(५) सद्गुरु बनखण्डी चरितामृतम् (भाषाटीका)।

(६) "जगद्गुरु श्रीचन्द्रोदयम् महाकाव्यम्" (मुनि-मानसं)।

(७) गुरु बनखण्डी जपुजी।

(८) धन्य सद्गुरु हिन्दी तथा गुरुमुखी।

(९) गायत्री।

इनके अतिरिक्त अनेकों ग्रंथ लिखे तथा विद्वानों को सहायता दे कर लिखवाए हैं।

स्वामी जी द्वारा संस्था के उपयोगी कार्य तथा प्रचार विभाग को प्रोत्साहन—पूज्यस्वामी जी महाराज ने श्री साधुबेला तीर्थ स्थान के चारो ओर बीस घाट पक्के पत्थर के बनवाए थे, पाठ-को समस्त संगमरमर से सुशोभित करके विजली, नल, उद्यान शाला, बाचनालय, औषधालय, वेद भवन, गीता भवन, सद्गुरु-बनखण्डि मन्दिर, सत्यनारायण, अन्नपूर्णा, हनूमान, गणेश, शंकर आदि २ सबके प्रथक २ मन्दिर बनवाये। तुलसीथला,

कोठार, साधुओं के निवासस्थान, भण्डारगृह, पंगत की जगह सर्व दर्शनीय बनी थी। सभामंडप जिस स्थल में पूज्य श्रीस्वामी जी महाराज नित्य उपदेश दिया करते थे तथा अन्य विद्वानों से भी कराते थे।

श्री साधुबेलातीर्थ के बायें ओर सिन्धु गङ्गा के किनारे धर्मशाला ऋषीकेश नाम से स्थापित की जिसमें यात्रीगण विश्राम करते थे।

पूज्य स्वामी जी महाराज सिन्ध हिन्दी विद्यापीठ, गौशाला, हिन्दूमहासभा, सिन्ध प्रान्तीय उदासीन साधू मण्डल के सभापति रहे। तथा समय २ पर प्रान्त में पृथक २ स्थानों में सम्मेलन करने की प्रेरणा करते थे। साधु, गृहस्थ प्रचारकों को आर्थिक सहायता दे करके प्रचारार्थ भेजा करते थे पूज्य स्वामी जी महाराज स्वयं अनेक सभा संस्थाओं के उत्सव पर जाया करते थे। पूज्य स्वामी जी महाराज के साथ में प्रायः महन्त सन्तप्रसाद जी तथा महाराज सुतीक्ष्णमुनि जी जाते थे।

पूज्य स्वामीजी महाराज विद्वानों मण्डलेश्वरों साधुओं को पदक तथा उपाधि एवं आर्थिक सहायता द्वारा प्रचार विभाग को प्रोत्साहन करते थे जैसे कि:—

स्वामी कृष्णानन्द जी, स्वामी गोविन्दानन्द जी, स्वामी परमानन्द जी, स्वामी देवप्रकाश जी, स्वामी ब्रह्मदास जी, को मण्डलेश्वर की उपाधि दी। पं० सुतीक्ष्णमुनि जी, स्वामी देवप्रकाश जी, स्वामी गणेशदास जी (वर्तमान पीठाधीश्वर) स्वामी ब्रह्मदास जी, पं० जीवन्मुक्ति जी को स्वर्णपदक।

पं० सुतीक्ष्णमुनि जी को हिन्दू सनातनधर्मोपदेशक, अनेक ग्रन्थनिर्माता, पं० जीवन्मुक्ति जी को व्याख्यान वाचस्पति की उपाधि दी इसी प्रकार अन्य बहुतों को दीं।

भारतभ्रमण तथा धार्मिक स्थिति का सूक्ष्मावलोकन

"अधीति वोधा चख प्रचारिणैर्दशाश्चतंसुः प्रणन्तु पाधिभिः"
(नैषध)

पूज्य स्वामी जी महाराज विश्व के विशाल मन्दिर में जागृति का जो शंख नाद करना चाहते थे उसकी उचित रूप रेखा अपने सिन्ध क्षेत्र में विशेषतः श्री साधुबेलातीर्थ में तैय्यार करके उस योजना को विश्वव्यापी बनाने के लिये स्वामी जी भारत भ्रमण के लिये निकले।

पूज्य स्वामी जी महाराज के भारत भ्रमणार्थ पाँच मुख्य उद्देश्य

(१) प्रत्येक नगर के विद्वत् मण्डल से सम्पर्क तथा परामर्श दान।

(२) तीर्थ पुरोहितों से सम्बन्ध तथा उन्हें समयोचित कर्त्तव्य शिक्षण।

(३) विशाल सभा में हिन्दू धर्म की व्यापक्ता एवं आवश्यकता पर प्रवचन।

(४) बालकों की शिक्षा का वास्तविक स्वरूप प्रदर्शन।

(५) धर्माध्यक्षों की तन्द्राभंग एवं उन्हें कर्मवीर बनाना।

पूज्य स्वामी जी महाराज की प्रथम यात्रा वि० सं० १९५० में प्रयागराज कुम्भ की हुई थी। पूर्वजों की मर्यादानुसार विशाल छावनी लगा करके अन्नक्षेत्र तथा पुस्तक वितरण प्रचार कार्य पूर्ववत् ही रखा था।

वि० सं० १९५७ में पूज्य स्वामी जी महाराज ने द्वितीय यात्रा की, इस यात्रा में पूज्य स्वामी जी महाराज के साथ

नि० शा० नि० महामण्डलेश्वर तपोमूर्ति महाराज बालराम-उदासीन जी तथा श्रीमान् पं० आत्मस्वरूप जी साथ थे उस समय स्वामी हरिनामदास जी की आयु छोटी होते हुये भी आपकी भाषण शैली प्रसन्न मुद्रा आगत व्यक्तियों पर आपका अच्छा प्रभाव डालती थी।

प्रसङ्गानुसार पूज्य स्वामी जी महाराज विश्वनाथ की नगरी श्री काशीपुरी में पहुंचे काशी के विद्वान्मण्डल के समक्ष धर्म की उपयोगिता पर जो स्वामी जी का मार्मिक प्रवचन हुआ उससे काशी के विद्वान् भी मन्त्र मुग्ध हो गये। उस समय काशी में महाराज श्री का नगर निवासियों ने चित्र खींचा जो कि अभी तक मनोहरता की छाप डाल रहा है।

वि० सं० १९६० में हरिद्वार कुम्भ पर गये। वि० सं० १९६२ में प्रयागराज का कुम्भ करके काशी होते हुये अपनी साधुमण्डली सहित पूज्य स्वामी जी मोरनझाड़ी में योगीराज सद्गुरु वनखण्डी जी महाराज को नैपाल तपस्या वाले स्थान का दर्शन किया जहाँ पर आज भी हाथी, शेर नित्य धूनी की परिक्रमा करने जाते हैं। तथा धूने की लकड़ी आपसे आप सरकती रहती है यह प्रत्यक्ष करामात यात्रीगण देखते हैं। इस यात्रा में पूज्य स्वामी जी महाराज के ज्येष्ठ शिष्य कोठारी महाराज हरिदास जी* भी साथ में थे।

---

* कोठारी महाराज बावा हरिदासजी का शुभ जन्म वि० सं० १९२४ माघ वदी ८ को देहलीनगर में गौड़ ब्राह्मण पिता मोहनलालजी शर्मा के घर में माता हरदेवी के गर्भ से हुआ था। आपके पूर्वज बड़े भारी शिवभक्त थे। तीर्थ-भ्रमण के बाद वि० सं० १९५० श्रावण सुदी १५ को पूज्य स्वामीजी महाराज से श्रौत चतुर्थाश्रमी दीक्षा ले करके

वि० सं० १९६६ में हरिद्वार की अर्द्धकुम्भी करके केदारनाथ, श्री बद्रीनारायण की यात्रा की।

वि० सं० १९६८ में देहली दरबार में रायबहादुर सेठ फतेह-चन्द्र जी के आग्रह करने पर गये थे।

वि० सं० १९७२ में हरिद्वार कुम्भ पर आये वि० सं० १९७४ में श्री प्रयागराज का कुम्भ करके पुनः साधुमण्डली सहित जगन्नाथ, रामेश्वर धाम, मुम्बई होते हुये स्थान श्रीसाधुवेलातीर्थ में आये।

वि० सं० १९८४ में हरिद्वार का कुम्भ करके गंगोत्री, यमनोत्री उत्तर काशी होते हुये काश्मीर श्रावणमास में अमरनाथ जी की यात्रा की।

वि० सं० १९८९ में श्री प्रयागराज का कुम्भ करके नैपाल यात्रा में सद्गुरु बनखण्डी जी महाराज की धूनी तथा श्री पशुपति महादेव जी का दर्शन किया। इस यात्रा में पूज्य स्वामी जी महाराज के साथ में कोठारी महाराज गुरुचरणदास जी (शिष्य पूज्य स्वामी जी) भी थे।

वि० सं० १९९५ में हरिद्वार कुम्भ करके देहरादून में आये वहाँ पर श्री गुरुरामराय दरबार के श्री महन्त लक्ष्मणदास जी से अनुरोध पूर्वक उनका शिष्य बनवाय नाम इन्द्रेश चरणदास

शिष्य बने। और श्री साधुवेलातीर्थ की सेवा करते रहे आप पूज्य स्वामीजी महाराज की सभी यात्राओं में साथ रहे। आपके समय में श्री साधुबेला तीर्थ की बहुत उन्नति हुई। कोठारी महाराज हरिदासजी वि० सं० १९९२ भादों सुदी १ को ६८ वर्ष की आयु में ब्रह्मलोक पधारे। तव से श्री साधुवेला तीर्थ के कोठारी महाराज गुरुचरणदासजी नियुक्त हुए जो कि अवतक हैं।

जी रखा, तथा उनको साथ में श्रीसाधुवेलातीर्थ लाय विद्याध्ययन कराया। वही श्री महन्त इन्द्रेशचरणदास जी एम० ए० आज कल दरबार गुरुरामराय जी देहरादून में वर्तमान महन्त हैं।

वि० सं० १९६५ में ही आपने नारायणसर कच्छदेश की यात्रा की थी।

वि० सं० १९९८ में प्रयागराज के कुम्भ पर आये कुम्भ पर्व का स्नान करने के पश्चात् अपनी साधु सेवक गृहस्थ मण्डली सहित चित्रकूट, काशी, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, देहली होते हुए श्री साधुबेला तीर्थ में आये। इस यात्रा में श्री साधुबेला तीर्थ के वर्तमान गद्दी धर स्वामी गणेशदासजी महाराज (शिष्य पूज्य स्वामीजी) भी साथ में थे।

प्रत्येक कुम्भ पर अन्न क्षेत्र तथा प्रचार कार्य—"सर्वारम्भा-स्तण्डुलप्रस्थमूला:" पूज्य स्वामीजी महाराज जब २ प्रयागराज हरिद्वार कुम्भों पर आते रहे तब २ अपनी विशाल छावनी (श्री साधुबेला तीर्थ सिन्धी छावनी) लगा करके अन्न क्षेत्र लगाते थे और वस्त्र वितरण करते थे। दोनों समय सभा मण्डप में देश, जाति के सुधारार्थ प्रचार आप स्वयं करते थे तथा विद्वानों का सम्मेलन करवाते एवं आर्थिक सहायता दे करके प्रचार करवाते थे। इसके अलावा निःशुल्क वाचनालय तथा औषधालय का कार्य भी सुचारु रूप से रखते थे। पूज्य स्वामीजी महाराज कुम्भ पर्वों पर आते समय मार्ग में सेठ चयनाराम, गोविन्दराम, गोपालदास के अत्यन्त प्रेम को देख अमृतसर ठहर करके उनका आतिथ्य सत्कार स्वीकार करते थे।

नोट—वि० सं० १९८० से लेकर समस्त यात्रा तथा कुम्भों में लेखक (सुतीक्ष्णमुनि) को पूज्य स्वामीजी ने बराबर अपने साथ रखा जो वह कुल कार्य के सँभाल करने का काम करते रहे।

जाती संगठन

पवित्र कुम्भों पर लाखों नरनारी एकत्रित होते थे। सनातन धर्म की विजय वैजयन्ती के नीचे लाखों जनता की सभा में पूज्य स्वामीजी महाराज का यही उपदेश होता था कि हिन्दू वीरो! जीवन का स्वरूप यह है कि संगठित रहो। संगठित तृण विशाल हाथी को बाँध लेता है जिस जाति में जितना प्रबल संगठन होगा वह जाति उतनी ही इतिहास में जीवित जाति कहलाएगी, मातृभाषा हिन्दी पढ़ो, व्यर्थ के आडम्बर में न फँसो देश जाती की सेवा करो, छोटे बड़े सबको अपना भाई समझो, उद्यमी बनो, बाल-विवाह, अनमेल विवाहादि कुरीतियों को हटावो। पुस्तक पत्रादिकों तथा सम्मेलन द्वारा भी उपरोक्त बातों को महत्त्व देते थे।

वि० सं० २००१ को पूज्य स्वामीजी महाराज अपने साथ में पं० हरिशरणदासजी तथा पं० सुतीक्ष्ण मुनिजी एवं साधु मण्डली सहित श्री साधुबेला तीर्थसक्खर से चल कर मुम्बई आये। बम्बई में श्री साधुबेला योगीराज सद्गुरु बनखण्डीजी महाराज की धूनी तथा महाराज गुरुमुखदासजी की समाधि का दर्शन किया। मुम्बई से दक्षिण देश का भ्रमण करते सिलोन कोलम्बो हो श्री रामेश्वर, जगन्नाथ, कलकत्ता, हरिद्वार, होते हुए श्री साधु-बेला तीर्थ में लौट आये। उस समय स्थान श्री साधुबेला तीर्थ में

नोट—"पूज्य स्वामीजी महाराज के अन्न क्षेत्र में यह विशेषता था कि गरीब, अमीर, सेठ, साहूकार सब एक समान बैठ कर भोजन करते थे सब दान में से अन्नदान ही श्रेष्ठ है। भूखे को रोटी नंगे को वस्त्र दिया तो हमने सबसे बड़ा कार्य किया। नारायण की पूजा तथा दर्शन अगर चाहते हो तो दरिद्रनारायण में उसकी पवित्र झांकी करो महाराज श्री के ऐसे पवित्र उपदेश होते थे।"

कोठारी गुरुचरणदासजी के प्रधानता में स्वागत समारोह मनाया गया था। तथा सक्खर शहर में सर्व मुख्य पन्चायतों, संस्थाओं की ओर से आपको मान पत्र भेंट किये गये शहर को सजा करके स्वामीजी महाराज का सम्मान किया था। अपनी यात्रा में पूज्य-स्वामीजी महाराज ने सब नगरों और तीर्थों में धार्मिक प्रचार के प्रवाह को प्रवाहित रखा जिसमें उपरोक्त पाँच उद्देश्यों को ही मुख्य प्रधानता दी। जिससे आपका सुयश चन्द्रमा भारत के कोने कोने में प्रखरित हो जगमगाने लगा।

सिन्ध प्रान्त तथा सक्खर में पूज्य स्वामीजी के आदर्श कार्य

(१) सिन्ध प्रान्त को मुम्बई प्रेजीडेन्सी से जब पृथक करने लगे तब पूज्य स्वामीजी महाराज ने इसके विरुद्ध आन्दोलन किया और कहा कि सिन्ध प्रान्त पृथक करना सिन्ध के हिन्दुओं को जीवित ही कुयें में ढकेल देना है। अहिन्दू इन्हें कभी भी जीवित न रहने देंगे। आज पाकिस्तान में सिन्ध के हिन्दुओं की जो दुर्दशा हो रही है इसका चित्र पूज्य स्वामीजी महाराज की आँखों के सामने सिन्ध विभाजन के समय पर ही पूर्णरूपेण चित्रित हो रहा था।

(२) सिन्ध प्रान्त वासियों में जागृति हो अपने धर्म तथा कर्म को हिन्दू समझें जातीय संगठन में अग्रणीय हों इन भावनाओं से प्रेरित हो कर पूज्य स्वामीजी महाराज ने जगद्गुरु श्रीचन्द्र उदासीनउपदेशक सभा का निर्माण किया उसके सभापति आप रहे तथा मन्त्री पं० सुतीक्ष्ण मुनिजी, इस सभा द्वारा आप प्रमुख कार्यकर्त्ताओं को समस्त भारत में प्रचारार्थ भेजा करते थे।

साथ ही सिन्ध प्रान्तीय उदासीन साधु महामण्डल की स्थापना पूज्य स्वामीजी महाराज ने इसी उद्देश्य से की कि इसके कर्मठ व्यक्ति प्रान्त भर में नवचेतना का मन्त्र फूकें जिससे हिन्दू समाज में जागृति का संचार होवे, आप सिन्ध प्रान्तीय उदासीन साधु महामण्डल के प्रधान रहे। आजकल सिन्ध प्रान्तीय उदासीन साधु महामण्डल के सभापति महन्त सन्तप्रसादजी महाराज हैं।

(३) वि० सं० १९७८ को सक्खर ऋषीकेश में सिन्ध प्रान्तीय उदासीन साधु मण्डल की कान्फ्रेंस का पहिला अधिवेशन करवा कर हिन्दू समाज में जागृति लाने वास्ते साधु मण्डल को प्रेरित किया।

(४) वि० सं० १९७९ में कराची में सिन्ध प्रान्तीय उदासीन कान्फ्रेंस का द्वितीय अधिवेशन आपकी प्रेरणा से हुआ।

(५) वि० सं० १९९३ में सिन्ध, कराची, मुलतान गौशाला सम्मेलन पूज्य स्वामीजी महाराज के सभापतित्व में हुआ जिसमें पण्डित, भजनीक आदिकों का सारा प्रवन्ध श्री साधुवेला तीर्थ की ओर से था।

(६) वि० सं० १९९९ प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ६ गुरुवार से श्री साधुवेला तीर्थ में यज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसके लिये वृहद् प्रबन्ध किया गया, इस महायज्ञ के बीच पुरुषोत्तम यज्ञ, अखण्डयज्ञ, चौबीस लाख गायत्री का जाप तथा श्रीमद् भागवत, रामायण, ग्रन्थ साहब के अखण्ड पाठ, देवी भागवत, सप्तसती, गीता, विष्णुसहस्रनाम के पाठ होते रहे साथ ही दोनों समय प्रचार कार्य भी चलता रहा। भण्डारा अखण्ड खुला था। यह यज्ञ ज्येष्ठ शुक्ल १४ को पूर्ण हुआ था।

(७) वि० सं० २००१ वैसाख शुक्ल ३ को अपने स्थान सक्खर माधोबाग में योगीराज सद्गुरु बनखण्डी महाविद्यालय

की स्थापना की जिसमें संस्कृत, हिन्दी, अँग्रेजी तथा सिन्धी भाषाएँ पढ़ाई जाती थीं जिसका सारा प्रवन्ध श्री १०८ स्वामी सन्तप्रसादजी* महाराज महन्त श्री साधुवेला ब्राजटाउन सक्खर वालों के हाथ में था। कुल खर्चा श्रीस्वामीजी का था।

(८) समय २ पर देश के किसी भी कोने में दैवी आपत्ति आती थी तो पूज्य स्वामीजी महाराज उसमें स्वयं दुखित व्यक्तियों की सहायता करते थे तथा औरों से भी करवाते थे। उदाहरणार्थ कोयटा के भूकम्प समय वहाँ क्षति विक्षत हजारों व्यक्तियों को मरहम पट्टी, दवाई का सामान, अन्न वस्त्र तथा बालकों को दूध बीमारों को फल आदिक स्वामीजी की ओर से मिलते थे। यह कार्य लगातार डेढ़ मास तक चलता रहा।

मारवाड़ के दुष्काल तथा बंगाल की भुखमरियों में पूज्य स्वामीजी की सहायता का प्रमुख भाग रहा था।

पूज्य स्वामीजी महाराज—उदासीन सम्प्रदाय के प्राचीन कर्णधार म० म० भारतभूषण पण्डित केशवानन्दजी महाराज (मुनि-

---

* स्वामी सन्तप्रसादजी महाराज—श्री साधुवेला तीर्थ के द्वितीय गद्दीधर स्वामी हरिप्रसादजी महाराज के ज्येष्ठ शिष्य स्वामी आत्मप्रसादजी महाराज थे। जिनका सक्खर नगर के पश्चिम दिशा में अपना स्वतन्त्र स्थान श्री साधुवेला ब्राजटाउन के नाम से प्रसिद्ध था उन्हीं स्वामी आत्माप्रसादजी के शिष्य स्वामी सन्तप्रसादजी महाराज हैं जो वड़े वुद्धिमान, नीति कुशल, समाज सेवी मिलनसार हैं प्रायः धार्मिक कार्यों में पूज्य स्वामी हरिनामदासजी महाराज का सहयोग देते रहे हैं। स्वामी सन्तप्रसादजी महाराज भी पाकिस्तान के कारण आजकल सिन्ध प्रान्त से निकल आगरा शहर कालामहल गुलावखाना में श्री साधुवेला बना कर अपने शिष्यों सहित निवास कर रहे हैं। उनका हम लोगों से पूर्ववत् प्रेम है।

मण्डल) वाजि, गजेन्द्र मृगेन्द्र, व्याख्यान वाचस्पति मण्डलेश्वर पण्डित स्वामी आत्मस्वरूपजी महाराज (गुरुमण्डल), प्रकाण्ड पण्डित प्रसन्नमूर्ति अलौकिक प्रतिभाशील महाराज श्री अरविन्दानन्दजी (कमल कुटीर), प्रभृति सम्प्रदाय के प्राचीन विद्वानों से तथा वर्तमान् श्री१०८ महन्त सन्तप्रसादजी महाराज, म० म० वेद दर्शनाचार्य पण्डित स्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी महाराज महामण्डलेश्वर, वेदान्ता चार्य पण्डित स्वामी असंगानन्दजी महाराज मण्डलेश्वर, दर्शन रत्न स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी रतनदेवजी महाराज, अवधूत स्वामी हंसदेवजी महाराज, स्वामी महन्त हंसदेव मुनिजी बी० ए०, स्वामी महन्त रामस्वरूपजी शास्त्री, स्वामी कृष्णानन्दजी, स्वामी गोविन्दानन्दजी, स्वामी देवप्रकाशजी शास्त्री, प्रभृति आधुनिक उदासीन पण्डित मण्डली से एवं महात्मा पं० मदनमोहनजी मालवीय, त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्तजी स्वामी प्रकाशानन्दजी हजरोंवाले, पं० दीनदयालजी, पं० अखिलानन्दजी, श्री गोस्वामी यदुकुलभूषणजी, तथा पण्डित माधवाचार्य जैसे प्रकाण्ड विद्वानों से धार्मिक जागृति एवं देश की स्थिर स्वतन्त्रता के विषय में बहुत ही सूक्ष्म विचार धारा चला करती थी और पूज्य स्वामीजी महाराज अपना अलौकिक अनुभव प्रदशित किया करते थे।

नेताओं से विचार विमर्श—लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, राष्ट्र पिता महात्मा गाँधीजी दो दफा श्री साधुबेला तीर्थ में आये थे तथा पूज्य स्वामीजी महाराज से मिले।

सन् १९३१ की कराची कांग्रेस से लौटते समय भारतवर्ष के प्रधान मन्त्री श्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू श्री साधुबेला तीर्थ में आये तथा पूज्य स्वामीजी महाराज से मिले थे। इसी प्रकार जितने भी नेता सिन्ध प्रदेश में आते थे वह पूज्य स्वामीजी महाराज

से श्री साधुबेलातीर्थ में आ करके अवश्य मिलते थे। स्वामीजी सबसे परामर्श तथा सबका यथा उचित सत्कार करते थे! मुम्बई एवं सिन्ध गवर्नर तथा सिन्ध प्रान्त के मन्त्रीगण पूज्य स्वामीजी महाराज से समय समय पर मिलते रहे।

मुम्बई तथा सिन्ध सरकार की ओर से पूज्य स्वामीजी महाराज को फौजदारी, दीवानी, आदि कोई भी न्यायालय में आने की छूट मिली थी। पाँच बन्दूक, एक रिवाल्वर का लाइसन्स आपको प्राप्त था किसी भी खतरे के समय सिन्ध सरकार की ओर से पुलिस एवं फौजी सहायता मिला करती थी।

आपको जो भी भेंट पूजा मिलती थी वह सब प्रचारकार्य, अन्नादिक जनता की सेवा में लगती थी यही कारण था कि पूज्य स्वामीजी का जनता हार्दिक मान करती हुई अपनी गाढ़ी कमाई का धन देते हुए संकोच नहीं करती थी।

वि० सं० २००३ में सेठ टी० मोटनदासजी के प्रार्थना करने पर उनके नवीन निवास स्थान के उद्‌घाटनार्थ पूज्य स्वामीजी महाराज कराची पधारे। रेलवे स्टेशन पर कराची की जनता ने आपका स्वागत किया तथा बाजों सहित जुलूस के रूप में ला करके पूज्य स्वामीजी महाराज को एक सजे हुए बँगले में निवास कराया। वहाँ पर विषद पंडाल के नीचे १५ दिन तक प्रातः सायं नित्य प्रति हिन्दूधर्म की जागृति वास्ते बृहद् प्रचार होता रहा कराची नगर की प्रमुख पंचायतों तथा कराची म्युनिसिपैलिटी की ओर से पूज्य स्वामीजी महाराज को मान पत्र दिया गया था। उस समय के प्रचार में स्वामी महन्त हंसमुनिजी बी० ए० राजगृही वालों का नाम उल्लेखनीय है।

पूज्य स्वामीजी महाराज की दिनचर्या (नित्यक्रिया)

पूज्य स्वामीजी महाराज नित्य प्रातः ४ बजे स्नान के उपरांत पाठ पूजा के पश्चाद् दो घन्टा साहित्य विचार तथा ग्रन्थ लेखनादि कार्य के पश्चाद् देवमंदिरों में प्रणाम करके सिंहासनपर विराजमान हो कर अपने मुखारविन्द से लोगों को सदुपदेश दिया करते थे, कथा के पीछे १२ वजे मध्याह्न पंगत में बैठ कर साधु, गृहस्थ आये यात्रियों सहित भोजन करते थे। भोजनोपरान्त विश्राम करते फिर समाचार पत्र पढ़ते थे जो दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक आते थे। पुनः सायंकाल ४ बजे सिंहासनपर बैठ करके उपस्थित जनता के समक्ष स्वयं धर्मोपदेश देते थे अथवा विद्वानों द्वारा धर्मोपदेश दिलाते थे।

सायंकाल आरती पूजन के वाद पूज्य स्वामीजी महाराज को सभी आश्रमवासी साधु महात्मा प्रणाम करते थे।

पश्चाद् गोपालगफ्फा (भोजन) कर आप शयन करते थे। पूज्य स्वामीजी महाराज आपुसी झगड़ों को तथा पञ्चायतो फैसलों का निर्णय किया करते थे। लोग कोर्ट में जाने से पहिले पूज्य स्वामीजी महाराज ही से निर्णय कराना ठीक समझते थे। पूज्य स्वामीजी महाराज का साधारण भेष, मिलनसार, विद्याभण्डार, सदा प्रसन्न वदन, पूर्ण विद्वान्, लेखक वक्ता, धर्मज्ञ, उपकार माननेवाले तथा करनेवाले सत्यवक्ता, दृढ़प्रतिज्ञ, सदाचारी, उदार, दानी, साधुसेवी, समस्त प्राणियों के हितचिन्तक, अपने मन पर अधिकार रखनेवाले, प्रभावोत्पादक, नीतिज्ञ, परम धैर्यवान्, यशस्वी, निरभिमानी, ज्ञानी, मधुरभाषी, जित्तेन्द्रिय, पवित्र, दयालु, आलस्य शून्य, गम्भीर ईर्ष्या, असूया, मात्सर्य रहित, बाहर-भीतर एकरस श्रीसम्पन्न और देशकाल

के जाननेवाले सभी आदर्शी गुणों में भरपूर थे जिससे प्रत्येक प्राणी पर अच्छा प्रभाव पड़ता था।

भारत विभाजन तथा सिन्ध के हिंदुओं को पूज्य स्वामीजी का सक्रिय आश्वासन

उचितमनुचितं वा कुर्वता कार्यं जातं परिणित रवधार्याय-त्नता पण्डितेन। अतिरभस कृतानां कर्मणा मा विपत्ते, भवति हृदयदाही शल्य तुल्यो विपाकः॥

अर्थ—उचित अथवा अनुचित कार्य करते हुए पण्डित का कर्त्तव्य है कि उसके परिणाम पर दृष्टिपात करे। फल को दृष्टि न रख करके सहसा किये कार्य का परिणाम विष के बुझे बाण की तरह मर्मान्तिक वेदना देता है।

जिस बात को लोग असम्भव कहते थे आखिर वही हुआ। सदियों से अपने घर के मालिक (राजनीतिक खिलाड़ियों के हाथों के खिलौने बन करके) दर-दर ठोकरें खाते हुए अन्न, वस्त्र के लिए मुहताज बन गये। सदा गरीबों का पोषण करनेवाला परिवार आज एक दाने-दाने को तरसने लगा। इस हृदयद्रावक दृश्य को देख करके दयामूर्त्ति पूज्य स्वामीजी महाराज के पवित्र मुखारविन्द से सहसा यह शब्द निकल पड़ा कि "नमोऽस्तु तस्मै भवितव्यतापै यस्याः प्रस्तदादिदमद्द जातम्।"

सिन्ध विभाजन के परिणाम क्या होंगे यह पूज्य स्वामीजी महाराज के शब्द आज सिन्ध वासियों की आँखों के सामने मूर्तिमान् बन गये। सिन्धु के भयविह्वल व्यक्ति जो पूज्य स्वामी जी महाराज के पास में आये। श्री स्वामजी ने उन व्यक्तियों के आँसू पोंछते हुए उन्हें आश्वासन दिया कि हिन्दू वीरो! कभी सुख है कभी दुःख है जीवन में गर्मी सर्दी सभी अनुभव करने

पड़ते हैं। इन्द्रादिक देवता भी असुरों के भय से पहाड़ी कन्द-राओं में छिप कर रहे परन्तु समय पा करके पुनः उन्होंने अपना खोया अधिकार प्राप्त किया।

इसलिए रामकृष्ण की सन्तान : तुम रोने के लिए नहीं बने। महाकालरूपी काली नाग के ऊपर तुम्हारे पूर्वजों ने नृत्य किया था धैर्य धारण करके प्रभु स्मरण करो तुम्हारे सबका विश्वम्भर रक्षक है।

पूज्य स्वामीजी महराराज का श्री साधुवेलातीर्थ का सदा के लिये परित्याग

प्रबल प्रतापी विश्व का कल्याणकारी सूर्य एवं अमृत किरणों-वाला चन्द्रमा भी केतु राहु द्वारा ग्रसा जाता है इसी प्रकार प्राणिमात्र को कल्याणपथ बताने वाले युग प्रवर्तक महापुरुष भी (पूज्य स्वामी हरिनामदासजी) अनेक कारणों से खिन्न मन हो कर वहाँ से सदा के लिये प्रस्थान का संकल्प कर दिया।

प्रस्थान करने से प्रथम भविष्य ज्ञाता पूज्य स्वामीजी महाराज ने अपने शिष्य महाराज गणेशदासजी को जो कि काशी में विद्या-ध्ययन कर रहे थे। तथा कोठारी महाराज गुरुचरणदासजी को जो कि हरिद्वार में स्वास्थ्य बदलने गये थे। तारें दे करके बुल-वाया तथा वसीयतनामा ता० १३-११-४७ को लिख के कोठारी महाराज गुरुचरणदासजी तथा महाराज गणेशदासजी को सौंप करके उनके साथ में महाराज हरिभजनदासजी, महाराज बृजमोहन-दासजी महाराज वनवारीदासजी को स्थान में रख दिया था।

आप (स्वामी श्री हरिनामदासजी) ने अपने साथ में महा-राज हरिशरणदासजी, महाराज अतरदासजी पं० सुतीक्ष्णमुनिजी सेठ गोविन्दराम चयनारामाणी डा० सुगनामल गेड़ीमल को

साथ में ले करके वि० सं० २००४ कार्तिक सुदी १३ ता० २६-११-४७ को श्री साधुवेला तीर्थसक्खर सिन्ध से सदा के लिये प्रस्थान कर दिया।

चलते समय पूर्वजों की पवित्र स्थली श्री साधुवेला तीर्थ को तथा मातृभूमि सिन्ध प्रदेश को तथा श्री सिन्धु गंगा को अन्तिम प्रणाम करते हुए स्वामीजी का हृदय विदीर्ण हो रहा था। दुःखी होने का कारण मोह नहीं था, किन्तु महापुरुषों की पवित्र स्थली की भविष्य में क्या दुर्दशा होगी दैव जाने यह विचार पूज्य स्वामीजी को आ रहा था। पूज्य स्वाजी महाराज ता० २७-११-४७ को कराची नगर में आये और सेठ टी० मोटनदासजी के निवास स्थान पर ठहरे। सेठ टी० मोटनदासजी की सेवा सराहनीय है। यहीं पर पाकिस्तान स्थित हिन्द के राजदूत श्री श्रीप्रकाश जी पूज्य स्वामीजी महाराज से मिलने आये थे।

ता०-३०-११-४७ को पूज्य स्वामी महाराजजी अपने साथियों समेत कराची से वायुयान द्वारा इसी दिन सायंकाल मुम्बई पहुँचे। हवाई स्टेशन पर आपके स्वागतार्थ अपारजन समूह एकत्रित था। सबका स्वागत स्वीकार करके पूज्य स्वामी जी अपनी साधु मण्डली सहित मोटर द्वारा अँधेरी स्थित सेठ हॉसानन्द रूपचन्द जी के निवास स्थान पर ठहरे। वहाँ पर आपने दाहिने नेत्र का आपरेशन कराया। नेत्रों को सफलता प्राप्त हो जाने पर आप अपनी साधु मण्डली सहित धर्मप्रेमी सेठ नेवन्दराम जी बजाज सेठ किशन दास जी, सेठ जोवतराम जी लालवाणी, सेठ हरिभगवान दासजी मिट्ठारामाणी को साथ लेकर ता०-२२-१-४८ को पूना आकर के श्रीमान् महन्त शारदा रामजी उदासीनगढ़, रामटेकरी वालों का अत्यन्त प्रेम देखकर के उनका आतिथ्य सत्कार स्वीकार कर निवास किया पूना में से० फगूमल जी छावड़ा तथा से० सुगनामल जी की सेवा सराहनीय है।

ता० २६-१-४८ को पूज्य स्वामी जी महाराज अपनी साधु सेवक गृहस्थ मण्डली सहित मोटर द्वारा महाबलेश्वर आकर सेठ भोगीलाल लहरचन्द जी जवेरी के निवास स्थान (बंगले) पर ठहरे।

महाबलेश्वर में भी दो मास तक लगातार धर्मोपदेश प्रचार कार्य चलाता रहा। जिससे सभी जाति के लोगों के ऊपर पूज्य स्वामी जी का अच्छा प्रभाव पड़ा।

ता० २७-३-४८ को पुनः मुम्बई आकर के सेठ हासानन्द रूपचन्द्र जी के निवास स्थान अँधेरी में निवास किया। यहाँ पर पूज्यस्वामी जी महाराज का नित्य प्रचार कार्य, कथा उपदेश चलता रहा। मुम्बई निवासी सिन्धी सेठ पोकरदास मेघराज, सेठ नेबन्द रामजी बजाज, सेठ परशुरामजी, सेठ आवतराम जी, सेठ किशनदास जी, सेठ जीवतराम जी, सेठ सतरामदासजी लालवानी, सेठ हरिभगवानदासजी मिट्ठारामाणी आदिक रात्रि दिन पूज्य स्वामीजी महाराज की सेवा में रह कर के तन, मन, धन से पूर्ण रूपेण सेवा करते रहे हैं। जो चिरस्मरणीय रहेगी उन सब का धन्यवाद है।

शरणार्थी समाज को सहायता प्रदान

पूज्यस्वामी जी महाराज ने कल्याण आदिक कैम्पों का निरीक्षण किया और शरणार्थियों के दुःखों की निवृत्ति के लिये हिन्द सरकार से लिखा-पढ़ी की और अपने सुयोग्य शिष्य कोठारी गुरु चरणदास जी से शरणार्थियों को अन्नवस्त्रादिक की सहायता वास्ते कहा। कोठारी गुरुचरणदासजी महाराज ने कल्याण कैम्प में जाकर यथाशक्ति निराश्रितों को अन्न वस्त्रादिक वितरण किया और अपने सेवकों को भी सहायता प्रदान करने

को कहा। पूज्य स्वामीजी महाराज के निवास स्थान अँधेरी में आये हुए पीड़ित शरणार्थी भोजन, वस्त्र तथा आर्थिक सहायता से लाभ उठाते रहे हैं।

शरणार्थियों के दुःख से महाराज कोमार्मिक सम्वेदना

चातुर्मास के समय बम्बई में मूसलाधार वर्षा से चारो ओर पानी पानी हो रहा था, शरणार्थी बच्चे तथा स्त्रियाँ ठंडी से बिलबिला रही थीं, भूख के मारे हाय हाय मच रही थी, खाने को अन्न नहीं, पहिरने को वस्त्र नहीं, रहने को जगह नहीं, लाखों के दान देने वाले लखपती व्यक्तियों के बालक और स्त्रियाँ आज अनाथ हो रही हैं। ऐसी करुणदशा शरणार्थियों की देख दया के समुद्र, पूज्य स्वामीजी का मनद्रवित हो उठा आत्मा के अन्तस्थल में गहरी ठेस (धक्का) लगा। आपने दुःखित हृदय भगवान् से प्रार्थना की कि हे प्रभो! इनका कल्याण करो और देश के कर्णधारों को सद्बुद्धि प्रदान करो जिससे इन लोगों का कष्ट दूर हो, इस मर्मान्तक वेदना का अनुभव करके महाराज श्रीकाशी वास की तैय्यारी में लग गये। प्रेमी लोगों ने आपको मुम्बई में रहने को बहुत कहा परन्तु पूज्य स्वामी जी महाराज के यही शब्द थे कि मेरे सेवक प्रेमी कैम्प में टुकड़ों को तरसते हों और मैं महलों में रहूँ यह कभी नहीं हो सकता है। सिन्ध, गंगा छुटी तो छुटी अब भागीरथी गंगा के आश्रित रहने का विचार है। इसी भावना से प्रेरित हो पूज्य स्वामी जी महाराज वि० सं० २००५ बैसाख सुदी ४ ता० १२-५-४८ को अपने साथ में महाराज हरिशरणदास जी, पं० सुतीक्ष्ण मुनिजी, पं० जीवन-मुक्त जी, पं० रामप्रपन्नजी, सेठ गोविन्द राम चयनारामाणी तथा नौकर शेरदास को साथ में लेकर के काशीपुरी वास्ते प्रस्थान कर दिया।

॥ काशीवास ॥

सेठ केसूराम जी, सेठ चयनामल जी, सेठ निश्चल दासजी, सेठ किसनदास जी की प्रार्थना करने पर पूज्य स्वामी जी महाराज ता० १४-५-४८ को श्री प्रयागराज उतर उपरोक्त सेठ जी के स्थान पर १३ दिन तक ठहर कर अपने धर्मोपदेश द्वारा आई जनता को प्रसन्न करते रहे उपरोक्त प्रेमियों की सेवा सराहनीय है।

ता० २६-५-४८ को पूज्य स्वामी जी महाराज श्री प्रयागराज से चल कर भूतभावन विश्वनाथ की पुरी श्री काशीजी में आये। स्टेशन पर पूज्य स्वामीजी के स्वागतार्थ उदासीन संस्कृत महाविद्यालय के विद्यार्थीगण तथा प्रमुख २ पण्डित साधुगण, पं० कृष्णशंकर जी त्रिपाठी और सिन्धी पंचायत उपस्थित थी सबका स्वागत स्वीकार करते हुए पूज्यस्वामी जी महाराज मोटर द्वारा भदैनी स्थित बगीची में आकर के निवास किया।

श्रीमान् महन्त हरीदासजी तथा आपके शिष्य महन्त सदानन्दजी (दोनों) ने यह स्थान भदैनी बी २।२५६ वाला तथा सकरकंद की गली वाला स्थान डी ७।२३ एवं अन्य सब अपने मकानों सहित अपनी सब चल अचल सम्पत्ति का सर्वाधिकार (मालिक) ता० २०-७-१९१२ ई० को सक्खर सिन्ध श्रीसाधुवेलातीर्थ के गद्दीधर पूज्य स्वामी हरिनाम दास जी तथा उनके उत्तराधिकारियों को लिखकर सरकारी रजिष्टर कराके दे गये हैं। अर्थात् दोनों अपने जीवन के पश्चात् श्रीसाधुवेला के गद्दीधरों को ही मालिक बनाया है। महंत सदानन्द जी तो यहाँ तक लिख के दे गये हैं कि मेरा कोई चेला नहीं है यदि कोई व्यक्ति मेरा चेला कहलावे तो वह मिथ्यावादी (नाजायज) माना जावे। इसी लेखानुसार ही अपने मिले हुए स्थान में

पूज्य स्वामी जी यहाँ अपने स्थान भदैनी में आथ मंडली सहित निवास करते भये॥।

पूज्य स्वामीजी महाराज के निवास करने से यह स्थान शोभायमान बन गया और श्री साधुबेला मठ के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया। दूर २ से आपके दर्शनार्थ प्रेमीजन आते थे तथा विद्वत्-मण्डली पूज्य स्वामी जी महाराज के पास में आया जाया करती थी।

नित्य नियम पूर्वक कथा प्रवचन प्रारम्भ हो गया जिससे दर्शक जनता को लाभ मिलने लगा। प्रति रविवार भगतलीला-राम, भोला राम, रांझाराम का शब्द कीर्तन होने लगा। बिजली आदि के लग जाने से और स्थान की शोभा बढ़ गई।

श्री साधुबेलातीर्थ सील मुहर तथा शेष साधुओं का भारत आगमन

पाकिस्तान सरकार ने सिन्धु से हिन्दुओं को निकालने के लिये अनेक षड़यन्त्र रचे थे जिसमें यह भी एक षड़यन्त्र था कि श्रीसाधुबेलातीर्थ से साधुओं को डरा धमका करके निकाल दिया जावे तो सिन्ध के शेष हिन्दू स्वयं बाहर हो जावेंगे, इसी बात को लेकर के ता० १६ नवम्बर १९४८ ई० को पाकिस्तान सरकार ने श्री साधुबेलातीर्थ की घृणित, नृशंस रूप से तलाशी ली, इस तलाशी में धर्म ग्रन्थ तथा मूर्तियों की प्रतिष्ठा नष्ट करते हुये पाकिस्तानी पुलिस ने अपने दानवता का पूर्ण परिचय दिया। और बिना किसी अपराध के उस समय के प्रबन्धक

---

* आपके आने से पूर्व यहाँ का प्रबन्ध आपकी आज्ञा से कुछ दिन श्री करतारदास जी के चेले पं० मोहनदास जी शास्त्री करते थे।

पूज्यस्वामी जी महाराज के शिष्य महाराज हरिभजनदास जी (जिनको कोठारी महाराज गुरुचरणदास जी सारा कार्य सौंप करके स्वास्थ्य ठीक करने को हरिद्वार गये थे)। तथा सेठ माधवदासजी गोविन्दरामाणी को ६ मास तक बिना केस चलाए कारागार में रखा और पश्चात् सिन्ध प्रान्त से निष्कासन कर दिया। महाराज हरिभजनदास जी श्रीसाधुबेलातीर्थ से आकर काशी में पूज्यस्वामी जी महाराज की सेवा में रहे और आज तक स्थान में ही सेवा कर रहे हैं।

श्री साधुबेलातीर्थ से महाराज हरिभजनदास जी के काशी चले आने के बाद में वहाँ का सारा प्रबन्ध पूज्यस्वामी जी महाराज की आज्ञा से महाराज गणेशदास जी (शिष्य स्वामी हरिनामदासजी) करते रहे।

आपने अत्यन्त भयङ्कर दशा में अनेक कठिनाइयों का सामना करते छोटी सी आयु में पूज्यस्वामीजी महाराज की आज्ञा का पालन करते हुये अपने पूर्वजों की स्थली श्रीसाधु-बेलातीर्थ की जो सेवा की है वह सराहनीय है।

सक्खर में साम्प्रदायिक झगड़ होने के बाद सक्खर शहर के हिन्दुओं को श्री साधुबेलातीर्थ में आश्रय लेना पड़ा उस समय महाराज गणेशदास जी ने उनके भोजन वस्त्र आदि का पूर्ण प्रबन्ध स्थान श्रीसाधुबेलातीर्थ की ओर से किया यह किसी से भुलाया नहीं जा सकता है हजारों निराश्रित गरीबों को सहायता प्रदान की प्रभु आपका दीर्घायु प्रदान करे ताकि श्रीसाधुबेला की उन्नति होती रहे।

पाकिस्तान सरकार की ओर से श्रीसाधुबेलातीर्थ की एवं वहाँ के निवासी साधु और गृहस्थियों की रक्षा का कोई भी उपाय न देख करके महाराज गणेशदासजी ने अपने सेवकों प्रेमियों

की सम्मति के अनुसार श्रीसाधुबेलातीर्थ तथा वहाँ का सारा सामान जिसमें मन्दिर, पाठशाला, वाचनालय, औषधालय, कोठार, गीताभवन, वेदभवन आदिक की सम्पत्ति जो अनुमानन ४ करोड़ की है पाकिस्तान सरकार के सुपुर्द करके सील मुहर कराया ।

और आप उसी दिन चल ता० ३१-१०-४६ को शेष साधु और नौकरों सहित कराची होते स्टीमर द्वारा ता० १० नवम्बर १६४६ को मुम्बई पहुँचे स्टीमर स्टेशन पर आपके स्वागतार्थ मुम्बई के प्रेमी जन उपस्थित थे पश्चात् आप सर्व साधु, नौकर गृहस्थियों सहित मुम्बई स्थित अपने स्थान श्रीसाधुबेला में निवास किया ।

ता० १५ नवम्बर १६४६ को मुम्बई से महाराज गणेशदास जी साथ में महाराज बृजमोहनदास जी महाराज बनवारीदास जी काशी वास्ते प्रस्थान किया और ता० १७-११-४६ को काशी पहुँच पूज्यपाद श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी की सेवा में उपस्थित हुये ।

श्रीसाधुबेलामठ काशी में पूज्य स्वामीजी के आदर्श कार्य

वि० सं० २००६ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ गुरुवार को काशी भदैनी मुहल्ला स्थित श्रीसाधुबेलामठ में पूज्यस्वामी जी महाराज से मिलने भारत के खाद्यमन्त्री श्री जयरामदास दौलतरामजी, श्री हरदेवीमलकानी, श्री यू० ए० आसरानी के संग आये थे पूज्यस्वामीजी के साथ बातचीत की ।

वि० सं० २००६ मार्ग शीर्ष शुक्ल १४ रविवार को पूज्य-स्वामी जी महाराज अपने स्थान श्रीसाधुबेला मठ में उदासी-नाचार्य श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीचन्द्रभगवान् की प्रतिमा साथ में भगवान् राधाकृष्ण जी की प्रतिमा जो अति सुन्दर

संगमरमर की हैं उन्हें वेदशास्त्र मर्यादानुसार स्थापित करायीं। इस समारोह में स्वामी सन्तप्रसाद जी महाराज महन्त श्रीसाधुबेला ब्राजटाउन सक्खर वाले तथा आसाम के गवर्नर श्री श्रीप्रकाश जी अपने लघुभ्राता श्रीचन्द्रभाल जी सहित पधारे थे। तथा नगर के कई एक प्रतिष्ठित साधु महन्त, पण्डित, गृहस्थों ने भाग लिया था।

ठीक उपरोक्त तिथिको मुम्बई स्थित अपने स्थान श्री साधु-बेला में पूज्यस्वामी जी महाराज की आज्ञानुसार जगद्गुरु श्रीचन्द्र उदाशीनाचार्य, श्रीराधाकृष्ण जी, श्रीशिवजी, श्रीहनूमान जी तथा श्री सूर्यभगवान् की प्रतिमाओं की स्थापना हुई थी।

पूज्य स्वामीजी महाराज का अनुभव

मूर्ति समारोह समाप्ति होने के अनन्तर महन्त सन्तप्रसाद जी महाराज जब आगरा के लिए प्रस्थान करने को बिदाई लेते समय पूज्य स्वामीजी महाराज से मिलने आये तब महाराज ने प्रत्यक्ष रूप से कहा कि महन्तजी अब हमारा पुनः मिलन दुर्लभ है हमारा यह नश्वर शरीर अब विशेष नहीं चलेगा। महन्तजी ने स्वामीजी महाराज को कहा कि आप ऐसा विचार न करें प्रभु आपको दीर्घायु प्रदान करे। परन्तु श्री स्वामीजी ने यही कहा कि अब मुझको दैवी चमत्कार से ऐसा ही प्रतीत हो रहा है। उस समय वियोगावस्था का दृश्य हृदयविदारक था और महन्तजी महाराज एवं पूज्य स्वामीजी महाराज के नेत्रों में जल आ गया कारण कि आपस में घनिष्ट प्रेम था।

महन्त सन्तप्रसादजी ने पूज्य स्वामीजी से कहा कि मैं पूज्यपाद सद्गुरु की वर्षी वास्ते जा रहा हूँ अन्यथा मैं

आपकी सेवा में ही रहता। ऐसा कह कर महन्त सन्तप्रसाद जी आगरा चले गये।

श्री महन्त इन्द्रेशचरणदासजी महाराज एम० ए० गद्दी-नसीन गुरु रामराय दरबार देहरादूनवालों ने पूज्य स्वामीजी महाराज को देहरादून आने वास्ते पहिले बहुत सी प्राथना की अन्त में महन्त पूर्णदासजी हैदराबाद दक्षिण तथा मैनेजर केशवचन्द्रजी को लाने वास्ते भेजा परन्तु पूज्य स्वामीजी महाराज ने काशी से बाहर जाना ठीक नहीं समझा और अन्त तक काशी में ही रहे।

इसी प्रकार गवालियर, हरिद्वार, मुम्बईवालों ने पूज्य स्वामीजी महाराज वास्ते यही चाहा कि यहाँ पर निवास करें परन्तु महाराज ने श्री काशीवास को ही उचित समझा और सर्दी-गर्मी सहन करते हुए अन्त तक काशी में ही रहे।

पूज्य स्वामीजी महाराज के शिष्य कोठारी महाराज गुरु चरणदासजी ने मूर्ति समारोह समाप्ति के पश्चात् हरिद्वार जाने की जब आज्ञा माँगी तो पूज्य स्वामीजी महाराज ने यही कहा कि प्रिय शिष्य! अब संसार में कुछ नहीं प्रभु ऐहिक लीला समाप्त हो जावे तो ठीक है महाराज गुरुचरणदासजी ने पूज्य स्वामीजी महाराज को प्रणाम किया। पूज्य स्वामीजी महाराज ने दोनों हाथ पीठ पर रखते हुये शुभाशीर्वाद दिया कि चिरञ्जीव रहो श्री साधुबेला की प्रेम से सेवा करते रहो।

पूज्य स्वामीजी महाराज ने अपने अन्य सेवा करनेवाले साधुओं को अपना स्वप्न सुनाया कि हम पुष्पों के विमान पर चढ़ करके स्वर्ग की ओर जा रहे हैं इसलिये यह शरीर अब अधिक दिन नहीं चलेगा। इसी प्रकार लेखक (सुतीक्ष्ण मुनि) से भी मृत्यु के चार दिवस प्रथम कहा था कि सुतीक्ष्ण मुनि अब हमारा शरीर अधिक दिन नहीं रहेगा।

श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी का अन्तिम दर्शन

श्रीमान् महाराज गणेशदासजी
चवर लिये खड़े हैं

विश्वशान्ति की रट लगाते हुए महानिर्वाण

महन्त सन्तप्रसादजी तथा कोठारी महाराज गुरुचरणदासजी के चले जाने के कुछ दिन बाद वि० सं० २००६ पौष कृष्ण ६ को पूज्य स्वामीजी महाराज के अचानक ही मस्तक में दर्द उत्पन्न हुआ जो पूज्य स्वामीजी महाराज के शरीर त्याग का कारण बना। उसी समय लेखक (सुतीक्ष्ण मुनिजी) ने महन्त सन्तप्रसादजी को आगरा और कोठारी महाराज गुरुचरणदासजी को हरिद्वार तथा सेठ गोविन्दराम चयनारामाणी जो कार्यवश कलकत्ता गये थे अर्जेण्ट तार दे कर बुलवाया।

महन्त सन्तप्रसादजी तार के मिलते ही आगरा से पौष कृष्ण ८ ता० १३-१२-४६ को अर्द्धरात्रि १२ बजे काशी स्थान श्री साधुबेला मठ में आ गये उस समय पूज्य स्वामीजी महाराज ध्यानावस्थित थे। महन्त सन्तप्रसादजी के आने के पौने दो घन्टे बाद प्रातः ७॥ बजे पूज्य स्वामीजी महाराज विश्व में शान्ति हो शिव-शिव कहते ब्रह्मलीन हो गये। अमर कीर्ति अपनी जगत में छोड़ गये। भारतवर्ष से एक अपूर्व कर्मनिष्ठ साधु-समाज का रत्न हमारे हाथ से उठ गया जिसका पूर्ति होना कठिन प्रतीत होती है। उसी दिन प्रातः ७ बजे सेठ गोविन्दराम चयनारामाणी तार के मिलते ही कलकत्ते से काशी स्थान में पहुँच गये उस समय का दृश्य हृदय-विदारक था।

पूज्य स्वामीजी महाराज के शरीर त्याग का समाचार बिजली की तरह काशी नगर में पहुँचते ही तमाम लोग अपना अपना काम काज बन्द कर स्थान साधुबेलामठ मदैनी में आय अन्तिम दर्शन पूजन करते श्रद्धाञ्जलि अर्पण करने लगे। श्रीमान् महन्त सन्तप्रसादजी, सुतीक्ष्ण मुनि और महाराज ईश्वरानन्दजी श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी के

चेले श्रीगणेशदासजी को जिन्हें पूज्य स्वामीजी महाराज सक्खर श्री साधुबेला तीर्थ से निकलते समय ता० १३-११-४७ के किये वसीयतनामे अनुसार महन्त गणेशदासजी तथा कोठारी महाराज गुरुचरणदासजी को स्थापित कर पूज्य स्वामीजी महाराज के मृतक शरीर की भेष मर्यादानुसार अन्तिम क्रिया महाराज गणेशदासजी (वर्तमान महन्त) से करवाई पश्चात् सुन्दर सजे हुए विमान में बिठा करके शंख, नरसिंहा, घंटा, नाद, बैण्ड बाजे सहित एक जुलूस के रूप में अस्सी घाट से हरिश्चन्द्र रोड, मदनपुरा होते दशाश्वमेघ घाट पर आये। यहाँ से नौका द्वारा मणिकर्णिका घाट पर गये। उसी समय कोठारी महाराज गुरुचरणदासजो लखनऊ से सायंकाल ४ बजे आ गये, पूज्य स्वामीजो महाराज का दर्शन करते अन्तिम श्रद्धांजलि दे वेद-मन्त्रों तथा जगद्गुरु श्रीचन्द्रमात्रा के पाठ घण्टा, नाद, ध्वनि के साथ में पतितपावनी श्री भागीरथी गंगाजी के अगाध जल के मध्य में सायंकाल ४।। बजे प्रवाहित कर जल समाधी दी गई। उस समय श्री गङ्गाजी में चारो ओर से नौकाएँ दर्शनार्थियों से भरपूर हो रही थीं।

काशी के विद्वान् साधुओं ने तथा उदासीन विद्यालयों में पूज्य स्वामीजी महाराज के निमित्त शोक सभाएँ कीं तथा श्रद्धाञ्जलि अर्पण की गई। श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी के देहावसान की तारें भारत तथा पाकिस्तान के जिन जिन नगरों में दी गई वहाँ वहाँ की सब सिन्धी पञ्चायतों ने अपना अपना कार व्यवहार बन्द करके शोक सभायें कर स्वर्गीय श्री स्वामीजी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर अपनी अपनी सहानुभूति की तारें और चिट्ठियाँ यहाँ भेजते भये लेखक उन सबका श्रीसाधुबेला की ओर से धन्यवाद करता है।

श्री १०८ स्वामी गणेशदासजी उदासीन वर्तमान गद्दीधर

सद्गुरु बनखण्डी आश्रम श्री साधुबेला तीर्थ सक्खर सिन्ध,
वर्तमान बी २।२५६ भदैनी, काशी ;१

स्वामी गणेशदासजी का श्री साधुबेलापीठारोहण

ब्रह्मलीन, पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय, तपोमूर्ति, शान्तात्मा, वर्तमान युग पथ प्रदर्शक, उदासीन वर्य्य श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी महाराज के तेरहवें दिन पौष सुदी ६ रविवार ता० २५-१२-४६ को काशी के समस्त उदासीन स्थानधारी साधु सन्त महन्त तथा बाहर से आये सन्त महन्त, सेवक गृहस्थियों को मिष्ठान्न पक्का भोजन हुआ।

उसी दिन १॥ बजे मध्याह्न पूज्य स्वामीजी के निमित्त रखे पाठ श्रीमद्भागवत सप्ताह तथा आदि ग्रन्थसाहिब के समाप्ति का भोग पाया गया। २॥ बजे नवग्रहादिक सर्व देवताओं का पूजन महाराज गणेशदासजी ने किया। पश्चात् योगिराज सद्गुरु बनखण्डीजी महाराज एवं ब्रह्मलीन तपोमूर्ति महासमर्थ पूज्य स्वामीजी महाराज को मानसिक प्रणाम करके गद्दी पर विराजमान हुये साधु-सन्तों, गृहस्थप्रेमियों द्वारा योगिराज सद्गुरु बनखण्डीजो महाराज की जय, तपोमूर्ति महासमर्थ स्वामी हरिनामदासजी की जय की हर्ष ध्वनि के साथ प्रथम तिलक उदासीन पञ्चायती बड़े अखाड़े के मुकामी महाराज निरञ्जनदासजी ने करके दुशाला ओढ़ाया।

पश्चात् सिन्धु प्रान्तीय उदासीन महामण्डल के प्रधान महन्त सन्तप्रसादजी श्री साधुबेला सक्खरवालों ने सिन्धु उदासीनभेष को ओर से तिलक करके चादर ओढ़ाई तथा अपनी ओर से भी चादर ओढ़ाई।

पीछे महाराज कोठारी गुरुचरणदासजी ने तिलक दे करके चादर पाई। बाद को महाराज हरिशरणदासजी सुतीक्ष्ण मुनिजी तथा सर्व गुरुभाई साधु, सन्त, महन्त गृहस्थ सेवकों

ने पृथक-पृथक चादर और तिलक दे साथ में भेंट पूजा चढ़ाई। मेला विशाल था।

शब्द कीर्तन विद्वानों के व्याख्यान तपोमूर्ति ब्रह्मलीन पूज्य स्वामीजी महाराज के जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली कवितायें कवियों ने सुना करके आई जनता को लाभ प्रदान किया।

पश्चात् आये हुए सर्व सन्त, महन्त महात्माओं विद्वानों को यथायोग्य विदाई भेंट, पूजावस्त्रादिक से सत्कार किया गया।

इस उत्सव में काशी के मजिस्ट्रेट श्री पं० रामलषणजी तिवारी, रेलवे मजिस्ट्रेट श्री उदयसरोज शाह, मजिस्ट्रेट श्री केशवप्रसादजी, जी० पी० राजेश्वरीप्रसादजी वकील, श्रीराजेश्वरीप्रसादजी वकील, श्री नागेश्वरप्रसादजी वकील, डा० साधूरामजी नोतानी, मिस्टर वीरूमलजी, सिन्धी पञ्चायत तथा और भी कई एक गणमान्य लोग पधारे थे। बाहर से भी सन्त महन्त सेवक गृहस्थ बहुत आये थे।

ध्वनिविस्तारक यन्त्र (लाउडस्पीकर) तथा प्रसाद देने का पूर्ण प्रबन्ध किया गया था।

कराची निवासी सेठ टी० मोटनदासजी सपत्नीक आये थे उन्होंने ब्रह्मलीन पूज्य स्वामीजी महाराज के निमित्त अखण्ड पाठ तथा साधुभोज दिया था।

पूज्यपाद ब्रह्मलीन तपोमूर्ति स्वामीजी महाराज के तेरहवें के भण्डारे निमित्तश्री प्रयागराज उदासीन पंचायती बड़ा अखाड़ा, तथा हरिद्वार उदासीन पञ्चायती बड़ा और नया अखाड़ा, श्री चेतनदेव आश्रम कनखल, मुनिमण्डलाश्रम, गुरुमण्डलाश्रम, अवधूत मण्डलाश्रम,स्वामी मेहरप्रसादजी,स्वामी चरणप्रसादजी, कमलकुटीर, बाबा कालीकमली क्षेत्र, पञ्जाब सिन्धु क्षेत्र, ऋषीकेश, अमृतसर अखाड़ा सिङ्गलवाला, श्रौतमुनि निवास वृन्दा-

बन, रामटेकरी उदासीन गढ़ पूना आदिक स्थानों में रुपये भेजे गये थे। तथा उदासीन संस्कृत महाविद्यालय ढुण्डीराज काशी, एवं गुरुसङ्गत महाविद्यालय मोरघाट काशी को सहायता दी गई थी। श्री साधुबेला उदासीनाश्रम बम्बई में ब्रह्मलीन पूज्य स्वामीजी महाराज के तेरहवें पर श्रीमद्भगवद्गीता, ग्रन्थ साहब के पाठों का भोग तथा मिष्टान्न भोजन विशाल समारोह के साथ पं० जीवनमुक्त* जी महाराज बनवारीदासजी ने स्थान की ओर से करके सब साधु सन्त महन्तों को यथायोग्य भेंट द्वारा सत्कार किया।

इस समारोह में वेददर्शनाचार्य पं० गङ्गेश्वरानन्दजी महाराज मण्डलीश्वर, तथा वेदान्ताचार्य स्वामी असङ्गानन्दजी, दर्शनरत्न स्वामी सर्वानन्दजी, न्यायवेदान्ताचार्य स्वामी कृष्णानन्दजी, स्वामी गोविन्दानन्दजी, स्वामी पं० देवप्रकाशजी शास्त्री, आदि प्रभृति विद्वानों ने अपार जनसमूह के आगे ब्रह्मलीन स्वामीजी महाराज के आदर्शों पर सारगर्भित एवं मार्मिक भाषण दिया। प्रसाद तथा लाउडस्पीकर का पूर्ण प्रबन्ध था। इस कार्य में मुम्बई निवासी से० टेकचन्द्र, सेठ लीलाराम, सेठ सुन्दरदास, टी० मोटनदास, सेठ बालचन्द्रजी, जे० बी० मंघाराम कम्पनीवाले, सेठ ठारूमल, गणेश खोपड़ा मील आदिक जिन २ प्रेमियों ने सहयोग दिया वे सब सराहनीय हैं।

---

* व्याख्यान वाचस्पति पं० जीवनमुक्तजी चेले महाराज गुरुदासजी के और गुरुदासजी चेले पं० हरीशरणजी के तथा पं० हरीशरणजी चेले श्री १०८ स्वामी जयरामदासजी के हैं, पं० जीवनमुक्तजी स्वर्गीय श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी की आज्ञा से श्रीसाधुबेला स्थान बम्बई में प्रशंसनीय सेवा कर रहे हैं।

परिशिष्ट

वैसे तो ब्रह्मलीन तपोमूर्त्ति, महा समर्थ पूज्य श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी महाराज के कई एक शिष्य हैं परन्तु इस समय जो स्थान में विद्यमान हैं उनमें:—

(१) स्वामी गणेशदासजी महाराज (वर्तमान श्री साधुबेलापीठाधीश्वर) का शुभ जन्म सक्खर नगर में वि० सं० १६८५ में धर्मप्रेमी सेठ गाहीमलजी के घर माता श्रीमती गङ्गाबाई के गर्भ से हुआ था आपका पवित्र जन्म नाम ईश्वरदास था। आपके पिता को कोई पुत्र सन्तान नहीं थी। सद्गुरु बनखण्डीजी महाराज से मान्यता की थी कि हे प्रभो यदि आपकी कृपा से पुत्र होगा तो पहिला पुत्र स्थान श्री साधुबेलातीर्थ की सेवा में अर्पण करूँगा। सद्गुरु बनखण्डीजी की दया से प्रथम ईश्वरदास का जन्म हुआ पूर्व प्रतिज्ञानुसार सेठ गाहीरामजी ने अपने प्रिय पुत्र ईश्वरदास को श्री साधुबेला मठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी महाराज को अर्पण कर दिया। स्वामीजी ने बालक ईश्वरदास को होनहार देख कर विद्याध्ययन कराना आरम्भ करा दिया।

पश्चात् वि० सं० १६६७ श्रावण कृष्ण ६ रविवार को पूज्य स्वामीजी महाराज ने ब्रह्मचारी ईश्वरदास को १२ वर्ष की आयु में उदासीन भेषमर्य्यादानुसार श्रौत चतुर्थाश्रमोदीक्षा देकरके शिष्य (चेला) बनाय नाम गणेशदास रखा। पश्चात् विद्याध्ययन वास्ते वेददर्शनाचार्य महामण्डलीश्वर पं० स्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी के आश्रम श्रौत मुनि निवास वृन्दावन में भेजा। वृन्दावन पढ़ने के पश्चात् आपको पूज्य स्वामीजी महा-

राज ने काशी उदासीन संस्कृत महाविद्यालय में प्रवेश कराया।

पाकिस्तान होने पर जब पूज्य स्वामीजी महाराज श्री साधुबेलातीर्थ से श्री काशीपुरी को आने लगे। तब तार देकरके महाराज गणेशदासजी को काशी से बुलाया तथा अपना वसीयतनामा स्वामी गणेशदासजी के नाम तथा कोठारी महाराज गुरुचरण दासजी के नाम अटर्नीपावर करके आप श्रीसाधुबेलातीर्थ से काशी आगये। पश्चात् स्वामी गणेशदासजी ने भयङ्कर समय में जो श्री साधुबेलातीर्थ की सेवा की वह अत्यन्त सराहनीय है आपकी बुद्धि एवं दृढ़ता का परिचय इससे ही होता है।

श्री साधुबेलातीर्थ सील मुहर करवा करके पूज्य स्वामीजी महाराज की सेवा में अन्त तक रहे और पूज्य स्वामीजी महाराज के ब्रह्मलीन होने के बाद ता० २५-१२-४६ रविवार मध्यान्ह २॥। बजे श्रीसाधुबेलापीठाधीश्वर का तिलक दिया गया। आपका स्वभाव मितभाषी है, विद्वानों का आदर करने वाले, सादगी, उदारहृदय हैं। प्रभु आपको दीर्घायु प्रदान करे ताकि हिन्दू जाति, राष्ट्र की पूर्ववत् उन्नति होती रहे।

(२) कोठारी महाराज गुरुचरणदासजी।

आपका शुभ जन्म सिन्धु गङ्गा के पवित्र तट सक्खर नगर में वि० सं० १९६४ पौष सुदी १५ को धर्मप्रेमी पिता से० भाँवनदासजी के घर माता भागयवती के गर्भ से हुआ जन्म नाम कन्हैयालाल था। कई एक वर्ष तक आप पूज्य स्वामी जी महाराज की आज्ञानुसार ब्रह्मचर्याश्रम शिकारपुर सिन्ध में विद्याध्ययन करते रहे विद्या प्राप्तकर संसार के गृहस्थ भोगों से इनकी रुचि उठ गई थी।

पूज्य स्वामीजी महाराज की सेवा में यात्रा की पश्चात् श्रीसाधुवेलातीर्थ की सेवा करते रहे जो प्रशंसनीय है। आप स्वयं अमानी रहकर दूसरों को सदा मान दिया करते हैं यही कारण था कि तीर्थ के सर्व सन्तों का आप पर अधिक प्रेम था। और कोठारी महाराज हरीदासजी के आप अधिक कृपा पात्र रहे हैं।

वि० सं० १९९५ माघ सुदी ५ (वसन्त पञ्चमी) को उदासीन मर्यादानुसार श्रौत चतुर्थाश्रमी दीक्षा लेकरके पूज्य श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी के शिष्य बने नाम गुरुचरणदास रखा गया। कोठारी महाराज हरीदासजी के देहावसान के पश्चात् आप श्री साधुबेलातीर्थ के कोठारी नियुक्त हुए और स्थान का सारा कार्य बुद्धिमत्ता अनुसार चलाते रहे। पूज्य स्वामीजी महाराज ने आपको अपना उत्तराधिकारी बनाने के वास्ते बहुत कोशिश की परन्तु आपने अस्वीकार कर दिया और श्रीसाधुवेला तीर्थ की सेवा करना ही ठीक समझा और द्वितीय गुरुभाई स्वामी गणेशदासजी को गद्दी वास्ते कहा। वर्तमान समय में पूज्य स्वामीजी महाराज के वसीयतनामे अनुसार महन्त स्वामी गणेशदासजी तथा कोठारी महाराज गुरुचरणदासजी सारा कारोबार चला रहे हैं।

(३) महाराज हरिभजनदास जी

वि० सं० २००१ पौषसुदी १५ शुक्रवार को ब्रह्मचारी टीकाराम ब्राह्मण को श्रीरामेश्वर की यात्रा में पूज्यस्वामी जी महाराज ने शिष्य बना करके नाम हरिभजनदास रखा। इनका जन्म नैनीताल का है। स्थान श्रीसाधुवेला मठ में सेवा कर रहे हैं आप मिलनसार, सरल हृदय हैं।

(४) महाराज ईश्वरानन्दजी ।

सुपुत्र महाराज श्री अमरदासजी* के पूज्य स्वर्गीय स्वामीजी की सक्खर में तथा काशी में हर समय रहके सेवा की और अभी कर रहे हैं आपकी जितनी प्रशंसा की जाय वह अत्युक्ति नहीं ।

(५) महाराज ब्रजमोहनदास जी

वि० सं० १६६८ चैत्र शुक्ल ४ शुक्रवार को वृन्दावन में ऋषिराम ब्राह्मण को पूज्यस्वामी जी महाराज ने शिष्य बना करके नाम ब्रजमोहनदास रखा आपने वैद्यक की परीक्षा दी है। इस समय आप श्रीसाधुबेलामठ काशी में रह करके सेवा कर रहे हैं।

(६) महाराज बनवारीदास जी

वि० सं० १६६६ माघसुदी ५ (बसन्तपंचमी) को कृष्णदास सारस्वत ब्राह्मण को पूज्यस्वामी जी महाराज ने शिष्य बनाकरके नाम बनवारीदास रक्खा आपका जन्म हरिद्वार का है । इस समय वर्तमान श्रीसाधुबेला पीठाधीश्वर स्वामी गणेशदास जी की अज्ञानुसार मुम्बई स्थित श्री साधुबेला में प्रेम पूर्वक सेवा कर रहे हैं।

---

* श्रीमान् महाराज अमरदास जी वि० सं० १६६७ माघ वदी १ को श्री स्वामी हरिनामदास जी के चेले बने आपने धर्मवीर नामक सिन्धी में समाचार पत्र निकाल के कई वर्ष देश जाति के जागृतिवाला कार्य सराहनीय किया आपने अपना अमर प्रेस खोल रखा था जिसमें हिन्दी अंग्रेजी गुरुमुखी सिन्धी की सुन्दर छपाई होती थी। आपका देवलोक वि० सं० १६६६ फाल्गुण सुदी १५ को हैदराबाद सिन्ध में ५६ वर्ष की अवस्था में हुआ। आपके पश्चात् महाराज ईश्वरानन्दजी आपकी कीर्ति को सुरक्षित बनाये हुये हैं।

(७) महाराज हरिहरदास जी

वि० सं० २००३ ज्येष्ठ सुदी २ (चन्द्रदिन) को ब्रह्मचारी गोविन्द को स्थान श्रीसाधुबेलातीर्थ में पूज्यस्वामी जी महाराज ने शिष्य बनाकर नाम हरिहरदास रखा। आप इस समय वर्तमान श्रीसाधुबेलापीठाधीश्वर स्वामी गणेशदास जी की आज्ञानुसार मुम्बई स्थित जगद्गुरु श्री श्रीचन्द्रजी मन्दिर (मातावाड़ी) ग्रान्टरोड में प्रेम से सेवा कर रहे हैं।

उपरोक्त पूज्यस्वामी जी महाराज का जीवन चरित्र सिन्धु से विन्दु लेकर के यह पुस्तक लिखी है समय मिलने पर पूज्यस्वामीजी महाराज का वृहद् जीवन चरित्र लिख करके पाठकों की सेवा में उपस्थित करूँगा। आशा है कि पाठक वृन्द इस जीवन चरित्र को पढ़कर लाभ उठावेंगे।

श्रीमान सेठ गोविन्दरामजी सहजवानी का कोटानुकोट धन्यवाद है जिन्होंने अपने गृह के सर्वसुखों का परित्याग कर पूज्य श्री स्वामीजी के साथ वि० सं० २००४ कार्तिक सुदी १३ को सक्खर से चल के अन्त तक रात्रि-दिन सेवा में लगे रहे। लेखक के साथ भी पूर्ण भ्रातृभाव रख सच्ची मित्रता निभा रहे हैं और आगे को भी निभायेंगे।

श्रीमान् पं० रामप्रपन्नजी विद्वान् उद्यमी व्यक्ति हैं आपने हमारे संग पूर्ण सहयोग दे पूज्य श्री १०८ स्वामीजी की प्रशंसनीय सेवा कर हमारे प्रत्येक कार्य में हाथ बटाया है इसलिये हम उनका धन्यवाद करना परम कर्तव्य समझते हैं।

श्रीमान् महाराज कृष्णानन्दजी, श्रीमान् महाराज सत्यदेव जी का धन्यवाद करता हुआ उपरोक्त सभी महानुभावों से अपनी त्रुटियों का क्षमा प्रार्थी हूँ। अन्त में हमारे इस कार्य में जिन

जिन समाचार पत्रों ने तथा मित्रों ने सहयोग दिया हम उनका भी हार्दिक धन्यवाद करना नहीं भूलते ।

उनके अलौकिक दर्शनों से दूर होता पाप था ।
अति पुण्य मिलता था तथा मिटता हृदय का ताप था ।।
उपदेश उनके शान्ति कारक थे निवारक शोक के ।
सब लोग उनके भक्त थे वे थे हितैषी लोक के ।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत् ।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

ह० सुतीक्ष्ण मुनि उदासीनः

लेखक पं० सुतीक्ष्णमुनिजी का संक्षिप्त परिचय

आपका शुभ जन्म वि० सं० १९४७ आषाढ़ सुदी १५ लखनऊ नगर में पिता गणेशचन्द्रजी माता श्रीमती तुलसी बाईजी से हुआ। वि० सं० १९६२ में अपने दादा-दादी के साथ श्री प्रयागराज के कुम्भ पर गये। वि० सं० १९६४ में तीन धाम की यात्रा की। वि० सं० १९६६ हरिद्वार की अर्द्धकुंभी कर श्री केदारनाथ, बद्रीनाथ की यात्रा की। वि० सं० १९७४ दीपमाला दिन वीतराग तपस्वी स्वामी जगनन्दनदासजी के चेले बन उदासीन भेष धारण कर नाम सुतीक्ष्ण मुनि रखा गया। आप पुनः समस्त भारत का भ्रमण कर प्रचार करते वि० सं० १९७९ महावारुणी पर हरिद्वार में अखिल भारत वर्षीय उदासीन कांफ्रेंस में आये यहीं पर आपको श्री स्वामी महाराज का प्रथम दर्शन हुआ। आपका मन श्री स्वामी हरिनामदासजी से तथा श्री स्वामीजी का मन आपसे मिल गया। वि० सं० १९७९ पौष सुदी १० को श्री साधुबेलातीर्थ में आय पूज्य श्री स्वामीजी की सेवा में रहने लगे जो श्री स्वामीजी के अन्त तक बराबर साथ रह तन मन से निस्वार्थभाव से कुल काम करते रहे। श्री साधुबेला तीर्थ के तथा पूज्य श्री स्वामीजो के साथ उदासीन सम्प्रदायी हितवाला प्रचार, पुस्तक लेखन, कथा आदि मुख्य कार्य आपका रहा। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं उनमें सबसे महत्व का वृहद् ग्रन्थ हिन्दूधर्म-व्यवस्था है। आपके अहेतु की सेवा, (देश और भेषवाली) चिरस्मर्णीय रहेगी आपका जितना भी धन्यवाद किया जाय वह थोड़ा है।

ह० जीवनमुक्त उदासीन

श्रीमान् स्वामी सुतीक्ष्ण मुनि उदासीन, हिन्दू सनातन धर्मोपदेशक अनेक ग्रन्थ निर्माता
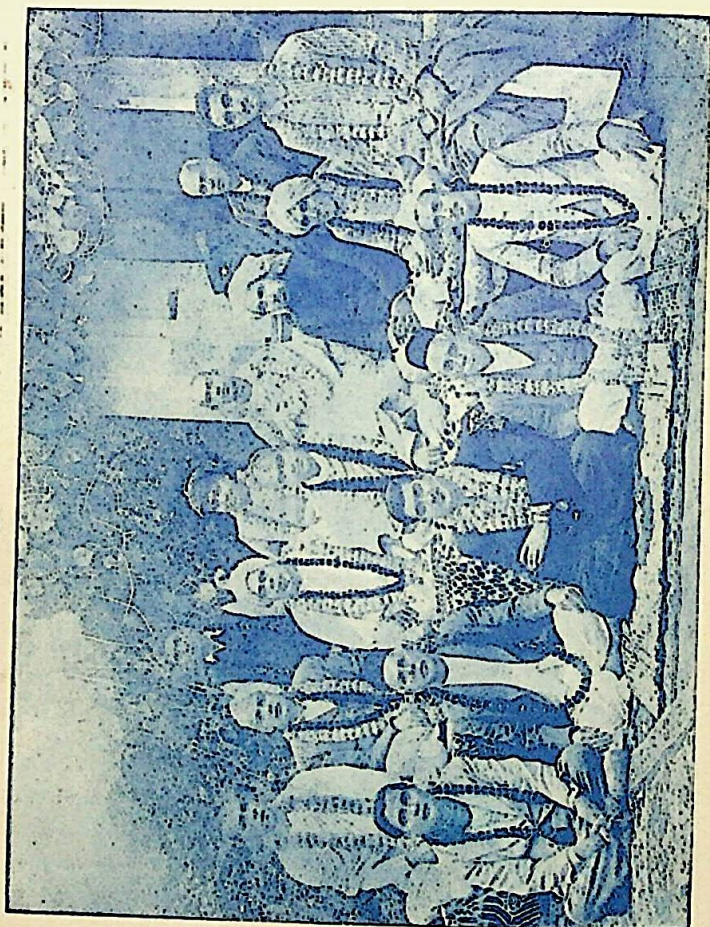
देखो परिचय इसके पीछे पृष्ठ पर

(श्री साधुबेलाश्रम बी० २।२५६ भदैनी काशी में मण्डल का लिया हुआ फोटो)

बैठे हुए महाराज हरिभजनदासजी, महाराज ईश्वरानन्दजी, महन्त सन्तप्रसादजी, स्वामी गणेशदासजी (महन्त श्रीसाधुबेला तीर्थ), कोठरी बाबा गुरुचरणदासजी, पं० सुतीक्ष्णमुनिजी, श्री ठाकुरदास अगनानी ।

नीचे बैठे—श्री वीरूमलजी, हकीम वीरूमलजी, श्री मेघराज छावड़िया, सेठ गोविन्दराम सहजवानी, श्री पंजूराम वर्मा ।

खड़े—रामचरित शुक्ल, महाराज ब्रजमोहनदासजी, हरिहर दास जी, डा० केशवदासजी(किस्साराम) ।

धन्यवाद प्रकाश

म लोग श्रीमान् परमादरणीय पूज्यपाद श्री १०८ महन्त स्वामी सन्तप्रसादजी, महाराज पं० सुतीक्ष्ण मुनिजी, श्रीमान् महाराज ईश्वरानन्दजी, श्रीमान् सेठ गोविन्दरामजी सहजवानी का हार्दिक धन्यवाद करते हैं जिन्होंने पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय हिन्दूधर्म-रक्षक उदासीन भेष-भूषण परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री गुरुवर श्री १०८ स्वामी हरिनामदासजी के साथ रह रात्रिदिन सेवा की है तथा पूज्य श्री स्वामीजी के पश्चात् हम लोगों के साथ स्थान के भीतरी बाहरी कुल कार्य में सहयोग दिया है और दे रहे हैं। आगे को भी हम यही आशा रखते हैं कि हम लोगों के साथ पूर्ववत् प्रेम रख स्थान के कुल कामों में सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपलोगों का शुभचिन्तक—
ह० स्वामी गणेशदासजी
कुठारी बाबा गुरुचरणदासजी
श्री साधुबेला मठ
बी० २।२५९ भदैनी काशी नं० १

मकरसंक्रान्ति
वि० सं० २००६
(१४–१–५०)

❀ उपदेश ❀

हिन्दू भाइयों सुनों ध्यान दे, आपस में तुम मेल करो
पर दुख काटो, करो भलाई, मान अपमान न रंच करो
हानि लाभ अरु हर्ष शोक में, निन्दा किसि की नाहि करो
परमेश्वर पर निश्चय रख के, देशोन्नति को सदा करो
सम दृष्टि ह्वै तजो मोह मद, ऊँच नीच का भूत हरो
सहजवानी का भंजन ईश्वर, जगत् पिता का ध्यान धरो
स्मरणीय हिन्दूधर्म-रक्षक उदा ेत विलम्ब न क्षणिक करो
व्राजकाचार्य श्री गुरुवर श्री १०८ स्वाम मिल सब से प्यार करो
रह रात्रिदिन सेवा की है तथा पूज्य श्री
लोगों के साथ स्थान के भीतरी बाहरी कुल का सब दूर करो
है और दे रहे हैं। आगे को भी हम यही आशा प्रबल करो
लोगों के साथ पूर्ववत् प्रेम रख स्थान के कुल कामें भाँति करो
प्रदान करते रहेंगे।

आपलोगों का शुभचिन्क—
ह० स्वामी गणेशदासजी
कुठारी बाबा गुरुचरणदासजी
श्री साधुबेला मठ
बी० २।२५६ भदैनी काशी नं० १

मकरसंक्रान्ति
वि० सं० २००६
(१४–१–५०)